डब्ल्यू. ई. बी. डु बॉइस

शांति सेनानी

बैंजमिन एल. हुक्स के संदेश के साथ

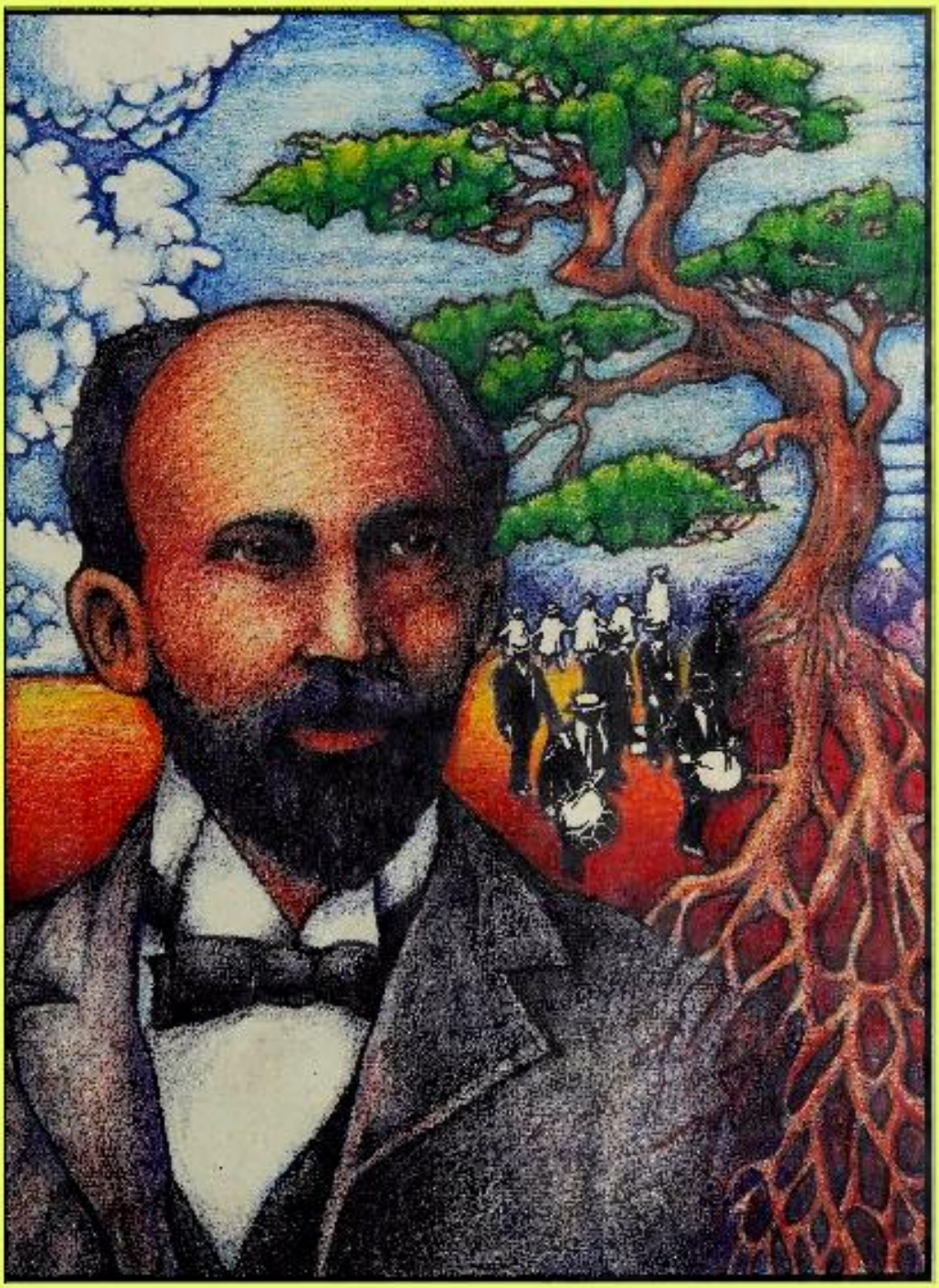

लेखन: कैथरीन टी. क्रेयन हिक्स चित्र: डेविड एच. हॉकिन्स भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

डब्ल्यू. ई. बी. डु बॉइस का जीवन तकरीबन एक शताब्दी लम्बा था, जिसके दौरान संयुक्त राज्य अमरीका के इतिहास में कई तुफानी दौर आए। वे एनएएसीपी के संस्थापकों में से एक के रूप में व उसी संगठन के मुखपत्र *क्राइसिस* के संपादक के रूप में विख्यात हैं। पर साथ ही वे एक जाने-माने समाजशास्त्री, शिक्षाविद, लेखक, इतिहासकार व नागरिक अधिकारों के सक्रियकर्मी भी थे।

अपने जीवन के आखिरी दशक में उन्होंने अपने प्रयास अंतरराष्ट्रीय शांति आंदोलन पर केन्द्रित किए। विश्व शांति के लिए उनकी गतिविधियों को अमरीका-विरोधी गतिविधि कमेटी (हाउस अन-अमेरिकन एक्टिविटीस् कमिटी, एचयूएसी) ने उन्हें साम्यवादी विचारों से सहानुभूति रखने वाला व्यक्ति करार दिया। दरअसल यह अमरीका का कम्युनिस्ट विरोधी या कहें 'लाल खौफ' (रेड स्केयर) का दौर था। डु बॉइस का अगर कोई गुनाह था तो सिर्फ यह कि वे दुनिया को देखने के दूसरों के नज़रिए को आँखें मूंद कर नहीं स्वीकारते थे। वे अपनी राह खुद तलाशते थे और अपने विश्वासों के हिसाब से जीते थे।

डु बॉइस समूचे अमरीकी इतिहास, खास तौर से अफ्रीकी अमरीकी इतिहास के महत्त्वपूर्ण हस्ती थे। उनका जन्म 1868 में अमरीकी पुनर्निमाण के दौरान हुआ। और उनकी मृत्यु अगस्त 1963 में वॉशिंगटन 'ग्रेट मार्च' के चन्द घंटों पहले हुई। उनके जीवन व विचारों ने आधुनिक नागरिक अधिकार आंदोलन को प्ररित किया है।

सचित्र जीवन कथा माला

डब्ल्यू. ई. बी. डु बॉइस

शांति सेनानी

बैंजमिन एल. हुक्स के संदेश के साथ

लेखन: कैथरीन टी. क्रेयन हिक्स

चित्र: डेविड एच. हॉकिन्स

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

बैंजमिन एल. हुक्स

यह कहानी डब्ल्यू. ई. बी. डु बॉइस की है, जिन्हें कई लोग संयुक्त राज्य अमरीका के प्रमुख काले बुद्धिजीवी मानते हैं। बेशक, स्पष्टवादी डु बॉइस कई सालों तक सिर्फ अमरीका में ही नहीं बल्की दुनिया के अन्य हिस्सों में भी काले लोगों की आकांक्षाओं की मज़बूत आवाज़ बने रहे।

डु बॉइस अश्वेत अमरीकियों के हकों के ताकतवर पैरोकार थे। पर साथ ही उनके सरोकार दुनिया भर के लिए भी थे। इनमें एक था विश्व शांति का उनका सपना।

डु बॉइस एक संजीदा विद्वान भी थे। उन्होंने अफ्रीकी गुलाम व्यापार का इतिहास लिखा। उनकी रचना *द फिलेडेल्फिया नीग्रो* समाजशास्त्र के क्षेत्र में एक नया प्रयोग मानी जाती है। पर अनेक लोग उन्हें उनके पैने लेखों के लिए जानते हैं जो उनकी पुस्तक *द सोल्स ऑफ़ ब्लैक फोक* में संकलित हैं।

डु बॉइस, नैशनल एसोसिएशन फॉर द एडवान्समेंट ऑफ़ कलर्ड पीपल (एनएएसीपी) के संस्थापकों में एक थे। अपने लम्बे जीवन काल में वे अनेकों विवादों से घिरे रहे। पर आज अधिकतर लोग मानते हैं कि वे हमेशा निडर हो अपने सिद्धान्तों पर टिके रहे।

- बैंजमिन एल. हुक्स

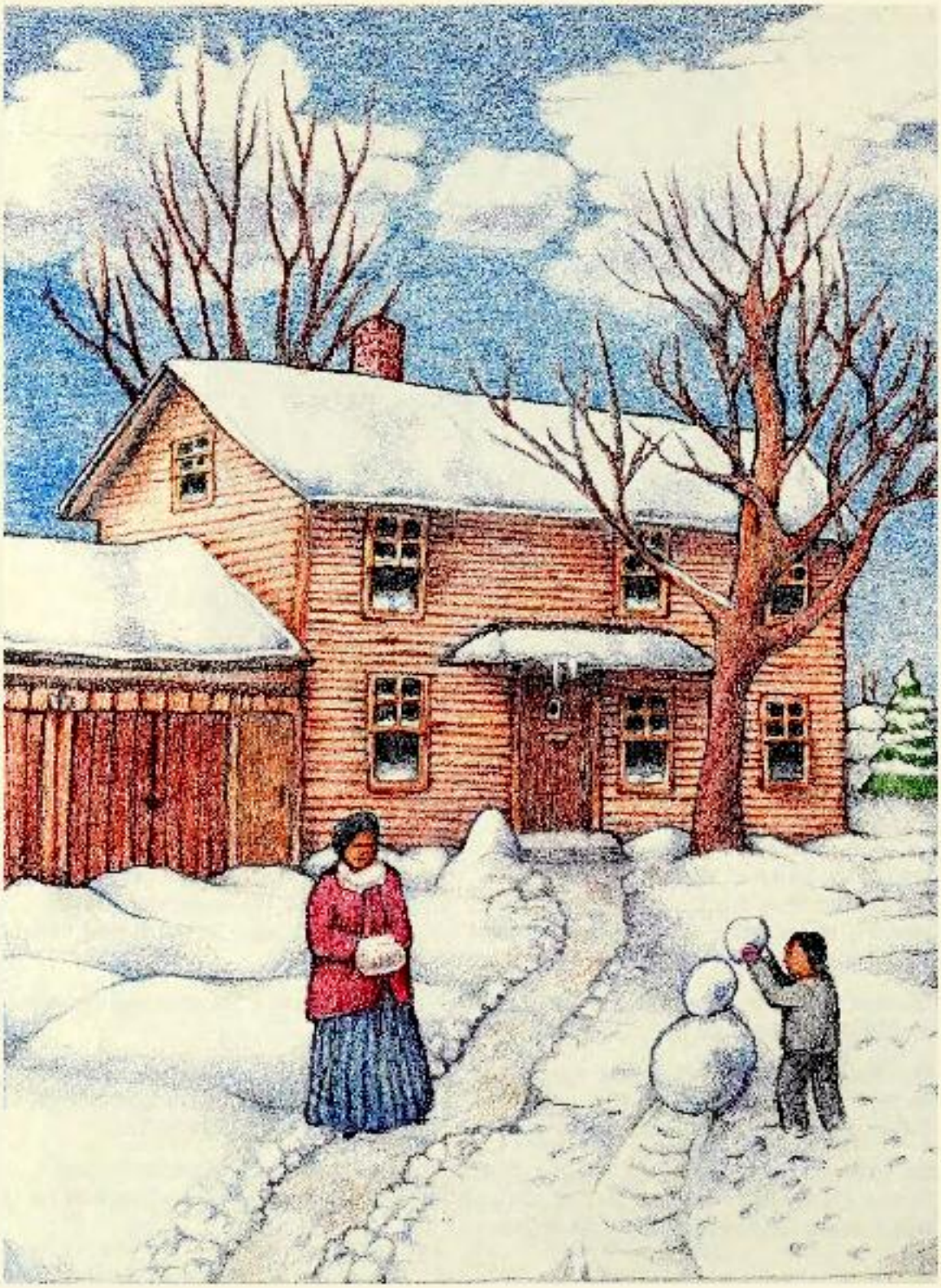

विलियम, ग्रेट बैरिंगटन में हरेक मौसम का मज़ा लेते थे।

सुरक्षित वादी

1868 में गृहयुद्ध को खत्म हुए करीब तीन साल गुज़र चुके थे। दक्षिण अमरीका के पूर्व गुलाम उम्मीदों से भरे अपनी नई-ताज़ी आज़ादी को परख रहे थे। इधर उत्तरी अमरीका में पुनर्निमाण के इन बदलावों से काफी दूर विलियम एडवर्ड बर्गहार्ट डु बॉइस का जन्म हुआ।

विलियम उत्तरी नीग्रो थे। उनकी माँ का बर्गहार्ट परिवार पीढ़ियों से ग्रेट बैरिंगटन, मैसाच्युसैटस् में रहता आया था। विशाल पहाड़ियों से सुरक्षित इस शांत कस्बे में बर्गहार्ट परिवार सबसे पुराने बाशिन्दों में शामिल था और इसलिए उसे सम्मान भी प्राप्त था।

विलियम के पिता, एल्फ्रैड डु बॉइस इलाके में नए थे। बर्गहार्ट परिवार उन्हें भरोसेमंद इन्सान नहीं मानता था। जब विलियम काफी छोटे ही थे एल्फ्रैड ग्रेट बैरिंगटन छोड़ गए और कभी वापस नहीं लौटे। विलियम को उनकी माँ ने पाला-पोसा। उनका गुज़ारा दूसरों के घरों की देखभाल करने और किराए से मिलने वाली रकम से चलता था।

ग्रेट बैरिंगटन किसी बच्चे के लिए स्वर्ग से कम नहीं था। गर्मियों में तालाबों व नहरों में तैरना, गुफाओं व फल बागानों में भटकना, पहाड़ों पर चढ़ना, सर्दियों में बर्फ पर स्केटिंग करना, विलियम सबका मज़ा लेते थे।

चर्च विलियम के शुरुआती जीवन का महत्त्वपूर्ण भाग था। वे अपनी माँ के साथ कांग्रिगेशनल चर्च जाते थे। उन्हें सनडे स्कूल खासतौर से पसंद था। वे अपने शिक्षकों से कठिन सवाल पूछा करते थे।

ग्रेट बैरिंगटन की अपनी सुरक्षित दुनिया के बाहर की पहली झलक विलियम को मिस्टर जॉनी मॉरगन की किताबों की दुकान से मिली। मॉरगन साहब नन्हे विलियम को पसंद करते थे और उसे किताबों और पत्रिकाओं को उलटने-पलटने की छूट देते थे। एक बार विलियम की नज़र पाँच खण्डों में छपी इंग्लैण्ड के इतिहास पर पड़ी। मॉरगन साहब ने विलियम को उसे किश्तों पर खरीदने की छूट दी। उन्होंने मैसाच्युसैटस् के अखबार में संवाददाता की नौकरी दिलाने में भी विलियम की मदद की।

अपने हाई स्कूल के तीसरे वर्ष विलियम को अपने दादा एलैक्जैण्डर डु बॉइस के पास न्यू बैडफोर्ड जाने का न्यौता मिला। यह बाहर की दुनिया की उनकी पहली यात्रा थी। विलियम ने वहाँ कम ही समय बिताया, पर वे अपने दादा से बेहद प्रभावित हुए। उनका बरताव और मेहमानों का स्वागत करने का औपचारिक सलीका, उनकी शान-शौकत, बर्गहार्ट परिवार से अलग था।

घर लौटते समय दादा के एक दोस्त विलियम को छोड़ने आए। रास्ते में वे रोड आइलैण्ड के प्रौविडेन्स नामक जगह पर खाने के लिए रुके। वहाँ अफ्रीकी मूल के हज़ारों लोग वैस्ट इण्डिया की आज़ादी का जश्न मना रहे थे। विलियम ने पहले कभी हर रंग और छब के इतने सारे काले लोगों को नहीं देखा था। उनके मन में अपनी अफ्रीकी विरासत पर गर्व का भाव जगा।

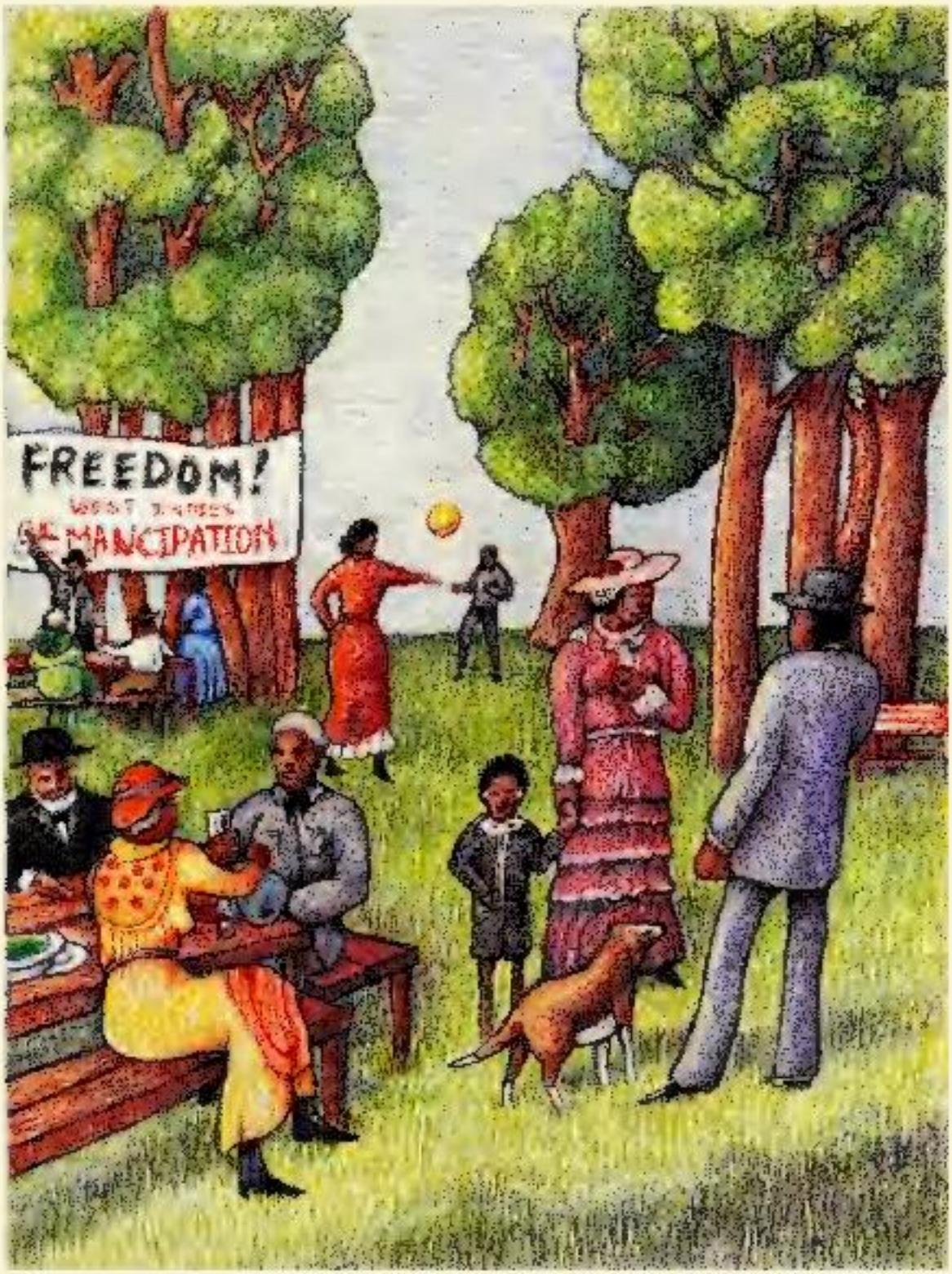

विलियम ने पहले कभी हर रंग और छब के इतने सारे काले लोगों को नहीं देखा था।

स्कूल की एक नई छात्रा ने विलियम का कॉलिंग कार्ड लेने से इन्कार कर दिया।

दक्षिण में काले लोग जो समस्याएं झेलते रहे थे उनसे विलियम काफी दूर थे। पर स्कूल की एक घटना ने विलियम को अहसास दिलाया कि सच्चाई कुछ और ही है। उन दिनों यह चलन था कि छात्र एक-दूसरे को अपने विज़िटिंग कार्ड देते-लेते थे। एक नई छात्रा ने विलियम का कार्ड लेने से इन्कार कर दिया और उसे हिकारत से देखा। विलियम को महसूस हुआ कि वह दूसरों से अलग है।

यह अपमान विलियम को बेहतर छात्र बनने की दिशा में ले गया। 1883 में विलियम ने आनर्स के साथ हाई स्कूल पूरा किया। अपने भाषण में विलियम ने वैण्डल फिलिप्स के जीवन पर प्रकाश डाला, जिन्होंने दास प्रथा का विरोध किया था। विलियम आगे पढ़ने के लिए हार्वर्ड विश्वविद्यालय जाना चाहते थे।

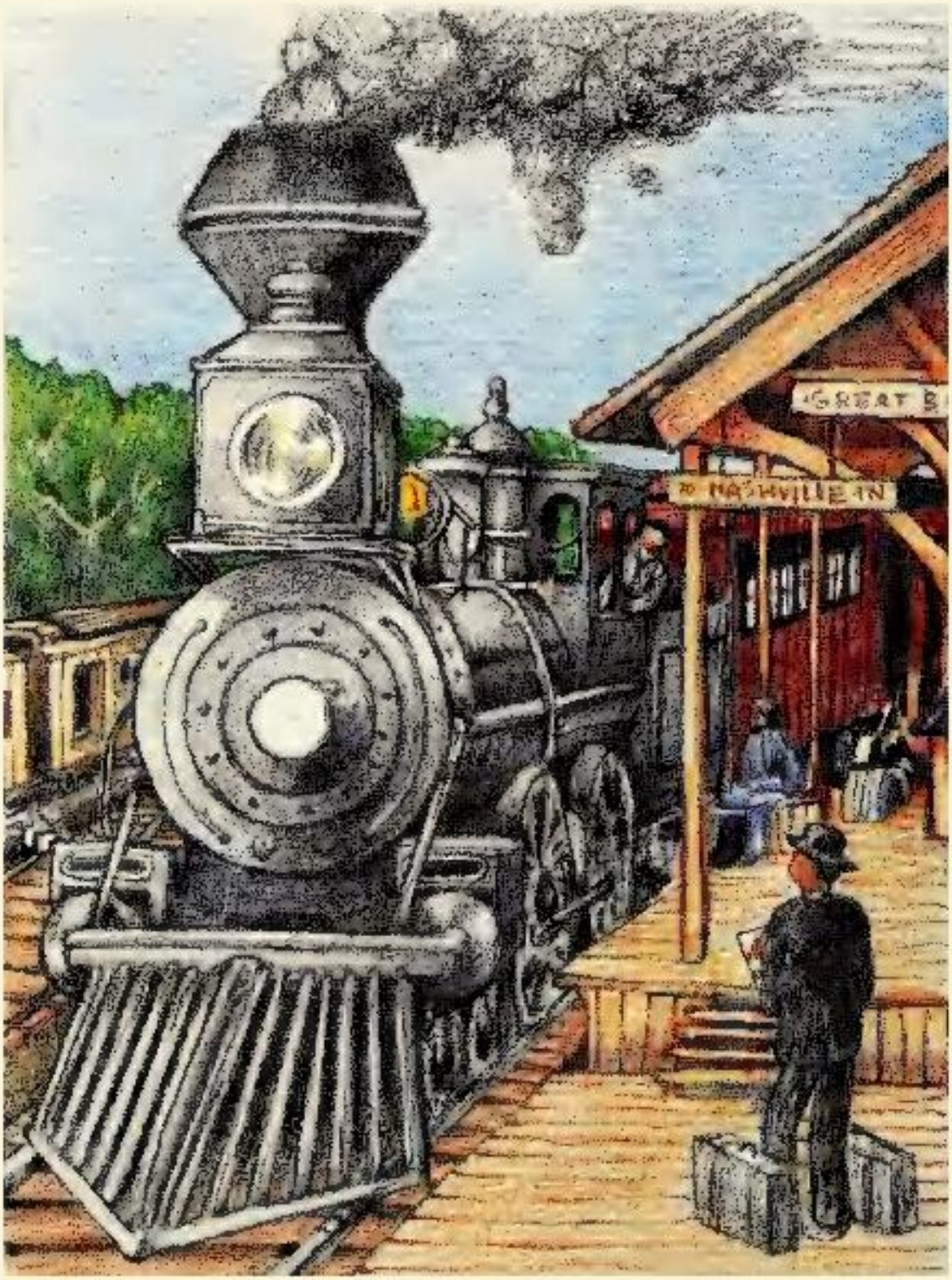

विलियम ने नैशविल स्थित फिस्क विश्वविद्यालय के लिए ग्रेट बैरिंगटन छोड़ा।

समझने की शुरुआत

हालांकि विलियम पढ़ने के लिए हार्वर्ड जाना चाहते थे, पर भाग्य और उसके मित्रों की योजना कुछ दूसरी थी। हाई स्कूल पूरा करने के बाद विलियम हिसाब-किताब रखने का काम करने लगे। उसी साल विलियम की माँ की मृत्यु हो गई। तीन स्थानीय लोग उसके सलाहकार बने। उन्होंने विलियम को नैशविल, टैनेसी के फिस्क विश्वविद्यालय जाने को प्रेरित किया, जो काले छात्रों का कॉलेज था।

विलियम के चर्च के पादरी रैवरेण्ड सी. सी. पेन्टर का मानना था कि विलियम का भावी कार्यक्षेत्र दक्षिण है। उन्होंने कस्बे के गिरजा घरों को विलियम की पढ़ाई के लिए पैसे जुटाने को मना लिया।

1885 में विलियम फिस्क विश्वविद्यालय के लिए चल पड़े। अपनी यात्रा के अंतिम हिस्से में उनकी मुलाकात आर्थो पोर्टर से हुई, जो वहीं पढ़ने जा रहा था। दोनों में दोस्ती हुई और उन्होंने साथ रहना तय किया।

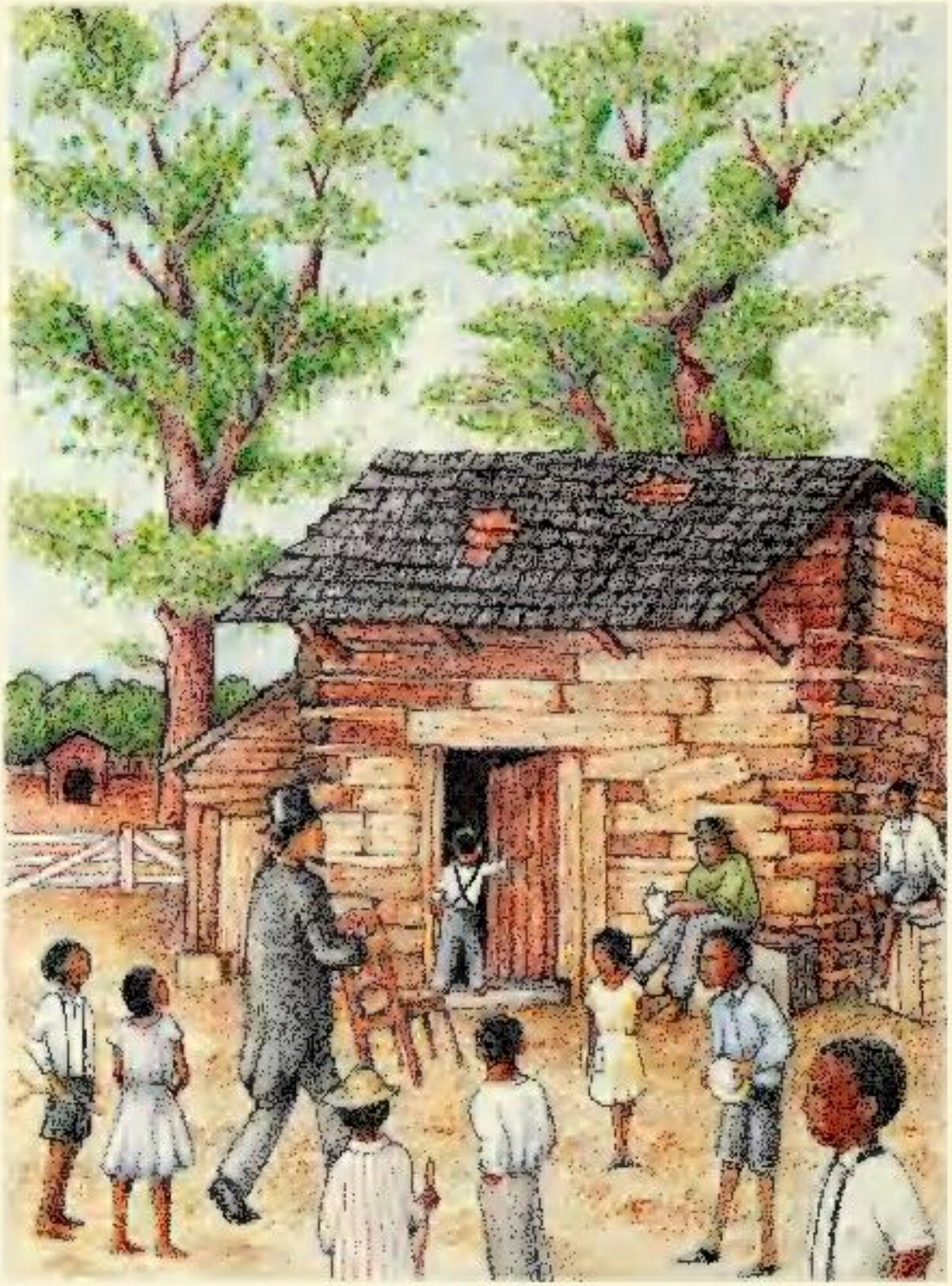

डु बॉइस को अपनी मकान मालकिन के घर से हर दिन स्कूल में कुर्सी लानी पड़ती।

विलियम इस बात से खुश थे कि फिस्क में वे ढ़ेरों काले छात्रों के साथ पढ़ेंगे। उन्हें वहाँ जा कर यह अहसास हुआ कि ग्रेट बैरिंगटन में वे दरअसल कितने अकेले थे। उन्होंने ठाना कि वे अफ्रीकी विरासत से उपजे इन लोगों के बारे में जानेंगे।

और सच में विलियम ने बहुत कुछ जाना-सीखा। जिन छात्रों ने अपने रोज़मर्रा के जीवन में लगातार अलगाव व अपमान झेला था उनसे उन्हें दक्षिण अमरीका की परिस्थितियों की सजीव जानकारियाँ मिलीं। उनमें कई छात्र खुद नस्ली कट्टरता, हिंसक भीड़ द्वारा कत्ल आदि देख चुके थे।

वैसे तो गृहयुद्ध को खत्म हुए बीस साल हो चुके थे पर दक्षिण में काले लोगों की स्थिति बेहतर नहीं हुई थी। विलियम स्थिति सुधारने में मदद करना चाहते थे। उन्होंने गर्मियों की छुट्टियों में ग्रामीण बच्चों को पढ़ाने का निर्णय लिया।

उनका स्कूल लकड़ी के लट्ठों बनी एक कोठरी में चलता जिसमें वे करीब तीस बच्चों को पढ़ाते थे। उनकी मेज़ तीन फट्टों से बनी थी और कुर्सी मकान मालकिन के घर से लानी और दोपहर को वापस लौटानी पड़ती थी। ये बच्चे दूर-दराज से पढ़ने आते थे।

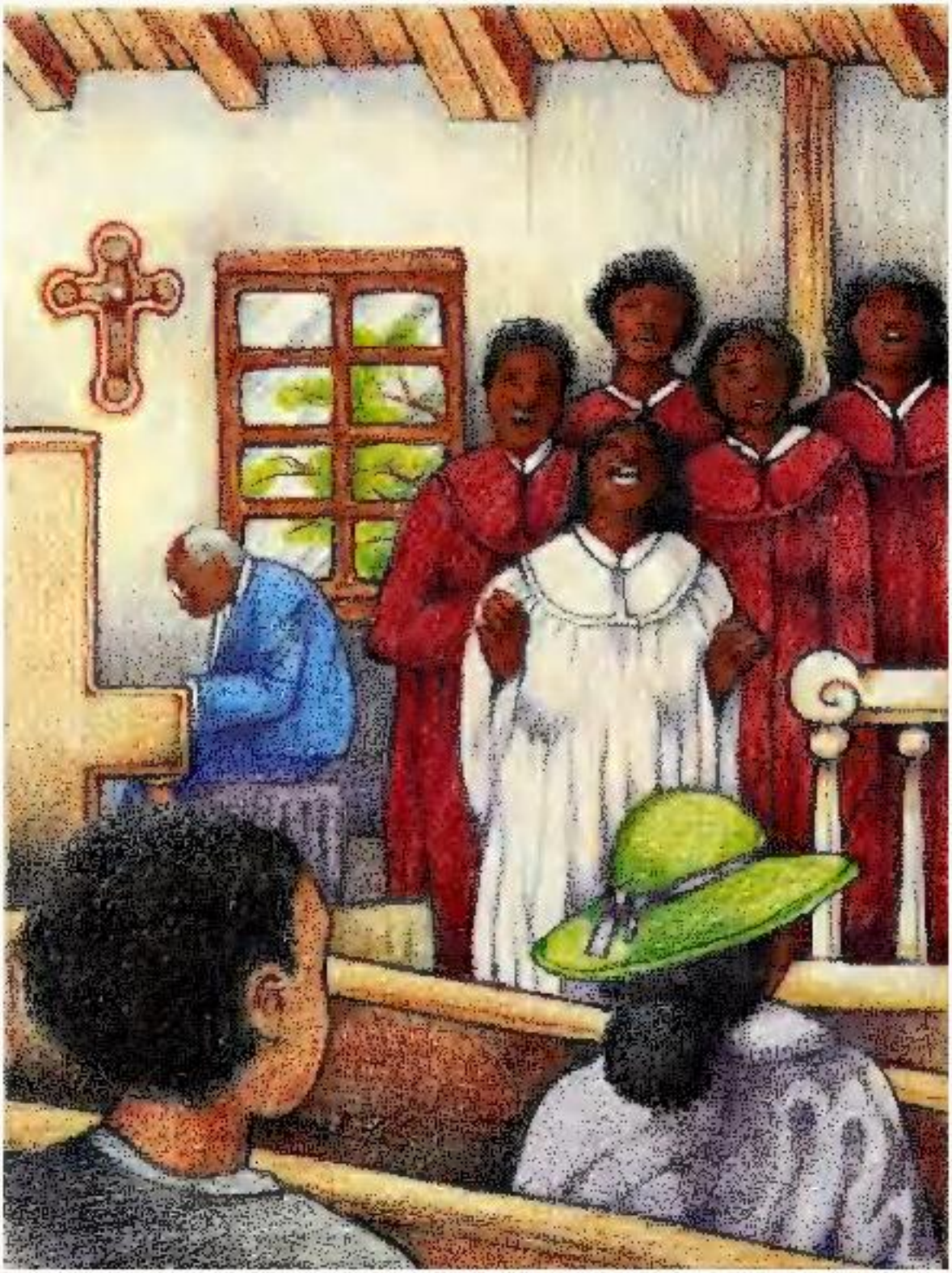

नीग्रो आध्यत्मिक (स्पिरिच्युअल) संगीत ने डु बॉइस पर भारी छाप छोड़ी।

उनके छात्र पढ़ना-लिखना, हिज्जे करना, सीख रहे थे और विलियम उनकी ज़िन्दगियों के बारे में। वे अपने छात्रों के परिवारों के साथ उनकी झोपड़ियों में रहते, उनके ही साथ खाते। इतवार को उनके साथ उनके चर्च जाते। दक्षिण के चर्चों के तौर-तरीके विलियम के लिए नए थे। पर वे उनकी प्रार्थनाओं को सम्मान के साथ सुनते, जो ''उन लोगों के बनाए नीग्रो गीत थे...जो उनकी अमरीकी जन्म भूमि में रचे गए थे।''

फिस्क से स्नातक अध्ययन पूरा करने के बाद विलियम ने हार्वर्ड विश्वविद्यालय में छात्रवृत्ति के लिए आवेदन किया। हार्वर्ड में पढ़ना उनका पुराना सपना था। हार्वर्ड में उन्हें तृतीय वर्ष के छात्र के रूप में स्वीकारा गया। दर्शनशास्त्र, इतिहास, अर्थशास्त्र और सामाजिकशास्त्र का अध्ययन करने के साथ वे अनेक गतिविधियों में सक्रिय रहे। पर यहाँ भी उन्हें काले छात्र होने का अपमान झेलना पड़ा।

इसके बावजूद उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर पहचान भी हार्वर्ड में ही मिली। स्नातक समारोह में अपने संबोधन में विलियम ने पूर्व राष्ट्रपति जैफरसन डेविड को उन लोगों का हिमायती बताया जो इसलिए लड़ रहे थे ताकि दूसरे लोग आज़ाद न हो सकें। राष्ट्रीय पत्रिकाओं व समाचार पत्रों में इस भाषण की प्रशंसा हुई।

विलियम अपना काम शुरू करने के पहले और अधिक प्रशिक्षण चाहते थे। उन्होंने बर्लिन विश्वविद्यालय में आवेदन किया। उन्हें छात्रवृत्ति और ऋण की मंज़ूरी मिली। 1892 की पतझड़ में बर्लिन में उनकी कक्षाएं शुरू हुईं।

उन्होंने युरोप में दो साल बिताए जिससे दुनिया को देखने के उनके नज़रिए में नयापन आया। गाँवों और छोटे कस्बों में दौरा कर विलियम ने पाया कि अमरीका की तरह वहाँ व्यक्ति के चमड़ी के रंग के परे अंदर के व्यक्ति को देखा जाता है। युरोपवासियों से उन्हें पूर्वाग्रह से मुक्त सम्मान मिला।

इस अनुभव ने विलियम को इन्सान के स्वभाव और भेदभाव की गहरी समझ दी। उन्हें काले अमरीकियों और दुनिया के तमाम शोषित समूहों, खास तौर से अफ्रीका और एशियाई उपनिवेशों के बाशिन्दों के बीच समानता नज़र आने लगी।

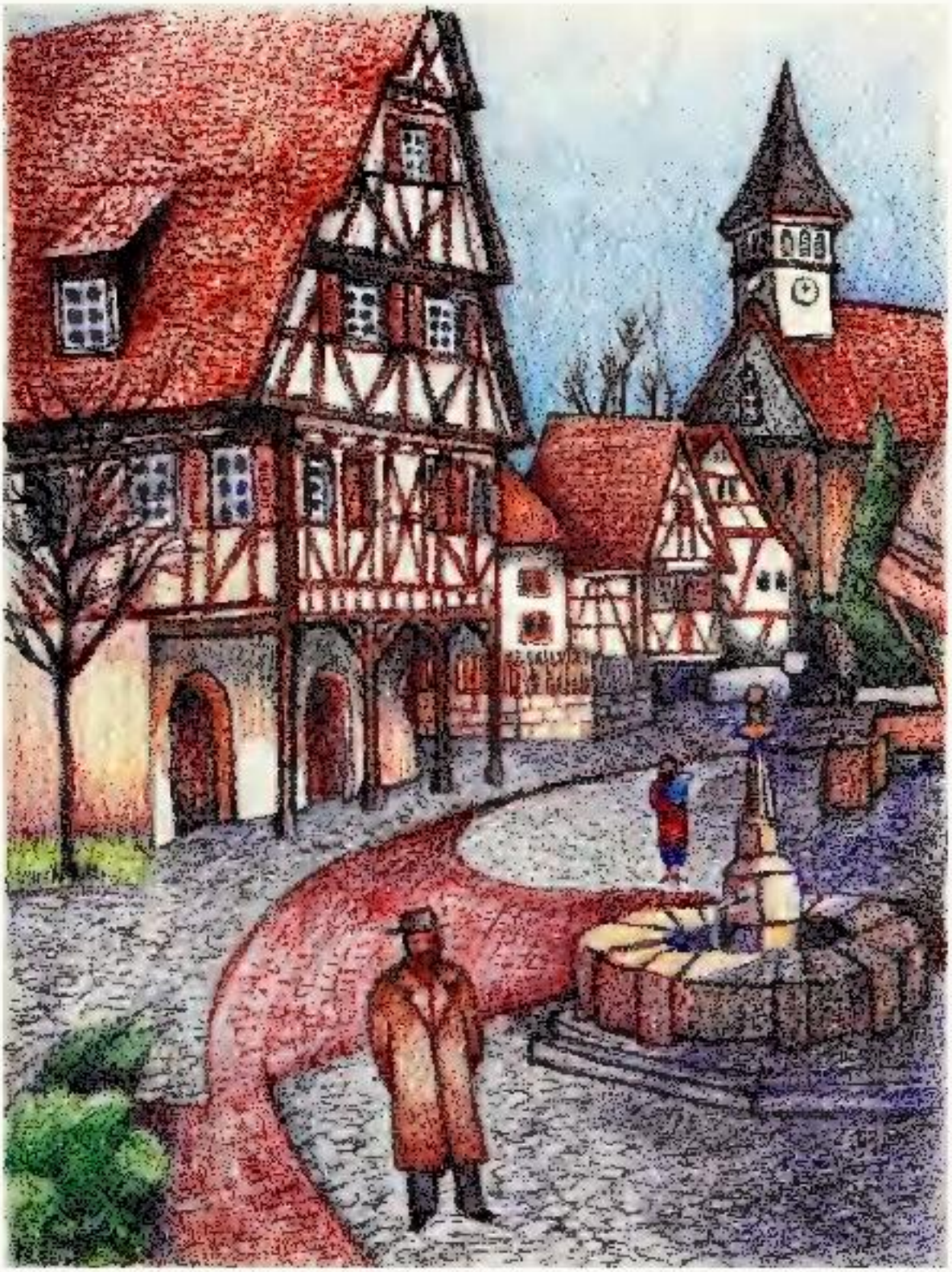

मैं पहाड़ों और वादियों में, घरों और स्कूलों में ऐसे स्त्री-पुरुषों से मिला जो अजनबी थे। धीमे-धीमे वे गोरे नहीं, सिर्फ इन्सान लगने लगे। मानव जीवन की तह में छिपी एकता ने मुझे जकड़ लिया। - डब्ल्यू. ई. बी. डु बॉइस

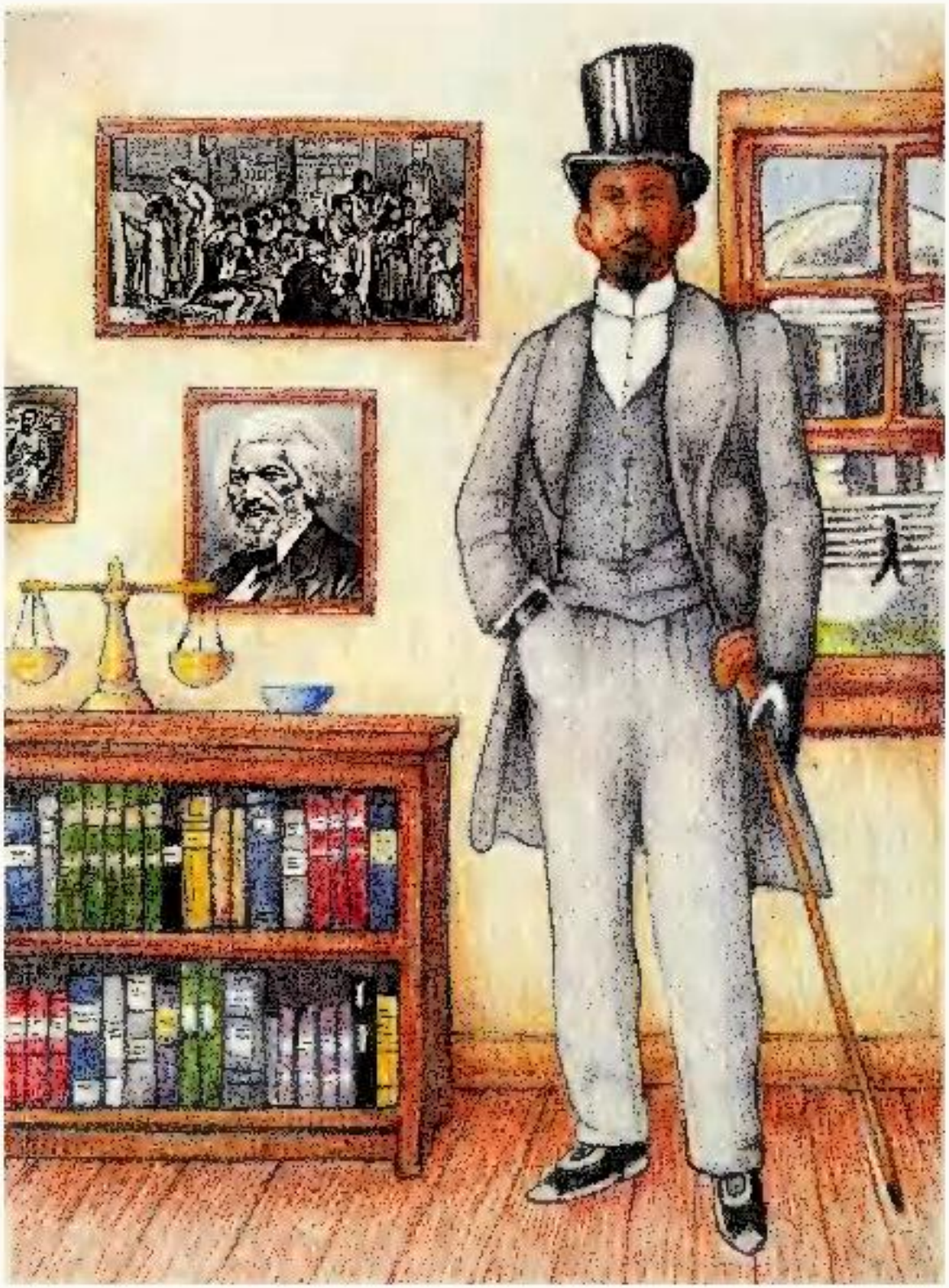

दक्षिण ओहायो में डु बॉइस अजीबो-गरीब लगते थे।

नौजवान विद्वान

1894 में अमरीका लौटने पर विलियम को पहली नौकरी ओहायो के ज़ेनिया विलबर फोर्स कॉलेज में ग्रीक व लैटिन प्रोफेसर की मिली। विलबर फोर्स कॉलेज की स्थापना अफ्रीकन मैथोडिस्ट एपिस्कोपल चर्च ने (एएमई) ने काले छात्रों के लिए की थी।

अपनी युरोपीय वेशभूषा के कारण वे अजीबो-गरीब लगते थे। कॉलेज के प्रबंधक विलियम के नज़रिए से संतुष्ट नहीं थे, उन्हें लगता था कि वे कुछ ज़्यादा ही उदारवादी हैं। इधर डु बॉइस भी कॉलेज के पाठ्यक्रम से संतुष्ट नहीं थे। दो साल तक उन्होंने पाठ्यक्रम में मानव समाज के अध्ययन को जोड़ने की असफल कोशिश की।

पर वे यहाँ कुछ सफलताएं भी पा सके। उन्होंने पीएचडी का अपना शोध प्रबंध पूरा किया, जिसका शीर्षक था ''संयुक्त राज्य अमरीका में अफ्रीकी दास व्यापार का उन्मूलन - 1638-1870''। डु बॉइस पहले काले अमरीकी थे जिन्हें हार्वर्ड विश्वविद्यालय से पीएचडी की उपाधि मिली और वे डॉ. डु बॉइस कहलाने लगे।

ओहायो में ही उनकी मुलाकात नीना गोमर से हुई जो विलबर फोर्स कॉलेज की छात्रा थीं। 1896 में दोनों का विवाह हुआ।

अपने पसंदीदा क्षेत्र में काम करने मौका उन्हें पैन्सिलवेनिया विश्वविद्यालय में मिला। विलियम और उनकी पत्नी फिलैडेल्फिया के सातवें वार्ड में एक कमरे में रहने लगे, जहाँ गरीब काले समुदाय के लोग रहते थे। विलियम ने दिन-रात जुट कर समुदाय के 5,000 लोगों का साक्षात्कार किया। पुस्तकालयों से आँकड़े तलाशे और सातवें वार्ड के लोगों का पिछले दो सौ सालों का इतिहास संकलित किया।

समय निकाल कर वे अपनी पत्नी नीना को ग्रेट बैरिंगटन भी ले गए। लौटते समय नीना को वे मैसाच्युसैटस् में पहले बच्चे के प्रसव के लिए छोड़ आए। 1897 में उनके बेटे बर्गहार्ट गोमर डु बॉइस का जन्म हुआ।

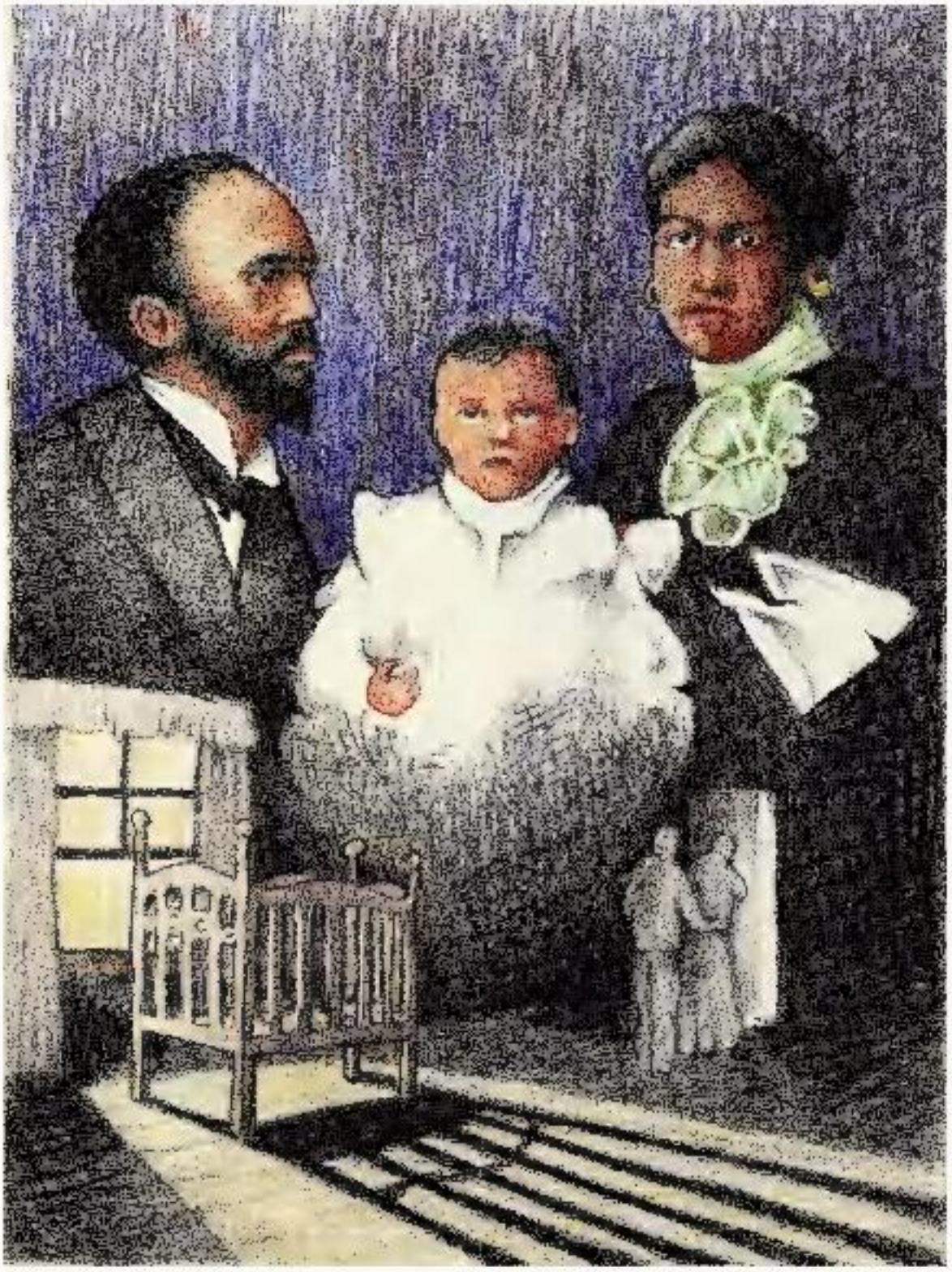

मौत की काली साया ने उनके शिशु को निगल लिया।

डु बॉइस की शोध *द फिलैडेल्फिया नीग्रो* में छपी। देश भर के विद्वान समुदाय ने इस शोध का स्वागत किया। एटलान्टा विश्वविद्यालय के अध्यक्ष तो इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने विलियम को अर्थशास्त्र व इतिहास के प्रोफेसर का पद देने का प्रस्ताव रखा।

डु बॉइस अपनी पत्नी व शिशु के साथ जॉर्जिया में रहने चले आए। यहाँ भी उन्होंने अफ्रीकी-अमरीकियों का अध्ययन जारी रखा। पढ़ाने के साथ उन्हें शहरी कालों की दुर्दशा पर विश्वविद्यालय का वार्षिक सम्मेलन आयोजित करने की ज़िम्मेदारी दी गई। उनको अमरीका के 'अग्रणी समाजशास्त्री' का शीर्षक दिया गया।

1899 में इन सफलताओं के बीच उन्हें भारी निजी त्रासदी का सामना करना पड़ा। दूषित पानी के कारण उनका अठारह महीने का बेटा पेचिश का शिकार हुआ। बीमारी के दसवें दिन मौत की काली साया ने शिशु को निगल लिया।

इस सदमे से नीना की जीने की इच्छा ही मानो खत्म हो गई। अगले साल उनकी बेटी नीना योलैण्ड डु बॉइस का जन्म हुआ पर उनकी पत्नी अपने बेटे की मौत का शोक मनाती रहीं।

अपने दुख को कम करने के लिए विलियम ने खुद को काम में झोंक दिया। उनका छोटा लेख 'ऑन द पासिंग ऑफ़ द फर्स्ट बॉर्न' उनके बेटे के जीवन के बारे में था। 1903 में यह लेख, तेरह अन्य लेखों के साथ *द सोल्स ऑफ़ द ब्लैक फोक* शीर्षक की किताब में छपा। उनकी 21 प्रकाशित पुस्तकों में यह सबसे अधिक पढ़ी गई पुस्तक है।

द सोल्स ऑफ़ द ब्लैक फोक आम लोगों के लिए लिखी गई थी। यह आम लोगों द्वारा पढ़ी, समझी, और खूब पसंद की गई। इसमें विलियम ने काले लोगों द्वारा झेले जा रहे अलगाव और भेदभाव की तुलना 'रंग के परदे के पीछे जीने' से की। डु बॉइस का यह मानना था कि 'बीसवीं शताब्दी की समस्या रंग भेद की समस्या है।'

नियाग्रा आंदोलन और एनएएसीपी का जन्म

आज़ादी के घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर होने के साथ आज़ादी और समानता की जो उम्मीदें जगी थीं वे शताब्दी के पलटने के साथ धुंधली पड़ गईं। दक्षिण के राज्यों ने ऐसे कानून बनाने शुरू किए जो कालों को मत देने का अधिकार देने से और सार्वजनिक वाहनों में गोरों के पास बैठने से रोकते थे।

इतना ही नहीं हिंसक भीड़ द्वारा कालों को घेरा और उन्हें सूली चढ़ाया जाने लगा। इन हत्यारों को न तो गिरफ्तार किया जाता न सजा दी जाती। रंग भेद का यह परदा घृणा और खून के मज़बूत धागों से बुना था।

1905 में डु बॉइस व उन्नतीस दूसरे अफ्रीकी अमरीकियों ने, नियाग्रा आंदोलन आयोजित किया। इस बैठक में कालों के लिए भी मतदान, न्याय व शिक्षा के अधिकारों की मांग की। डु बॉइस ने साथ ही यह भी साफ कहा कि "हम हिंसा में विश्वास नहीं करते।"

इसके बावजूद उत्तर के मुख्य शहरों में नस्ली दंगे भड़के। इनमें से एक तो एब्राहम लिंकन की कब्र से दो मील दूर स्प्रिंगफील्ड में दो दिनों तक चलता रहा। काले लोग अपना घर-बार छोड़ कर भागने पर मजबूर हुए। उनके घर लूटे और जला दिए गए। सत्तर से अधिक लोग गंभीर रूप से घायल हुए।

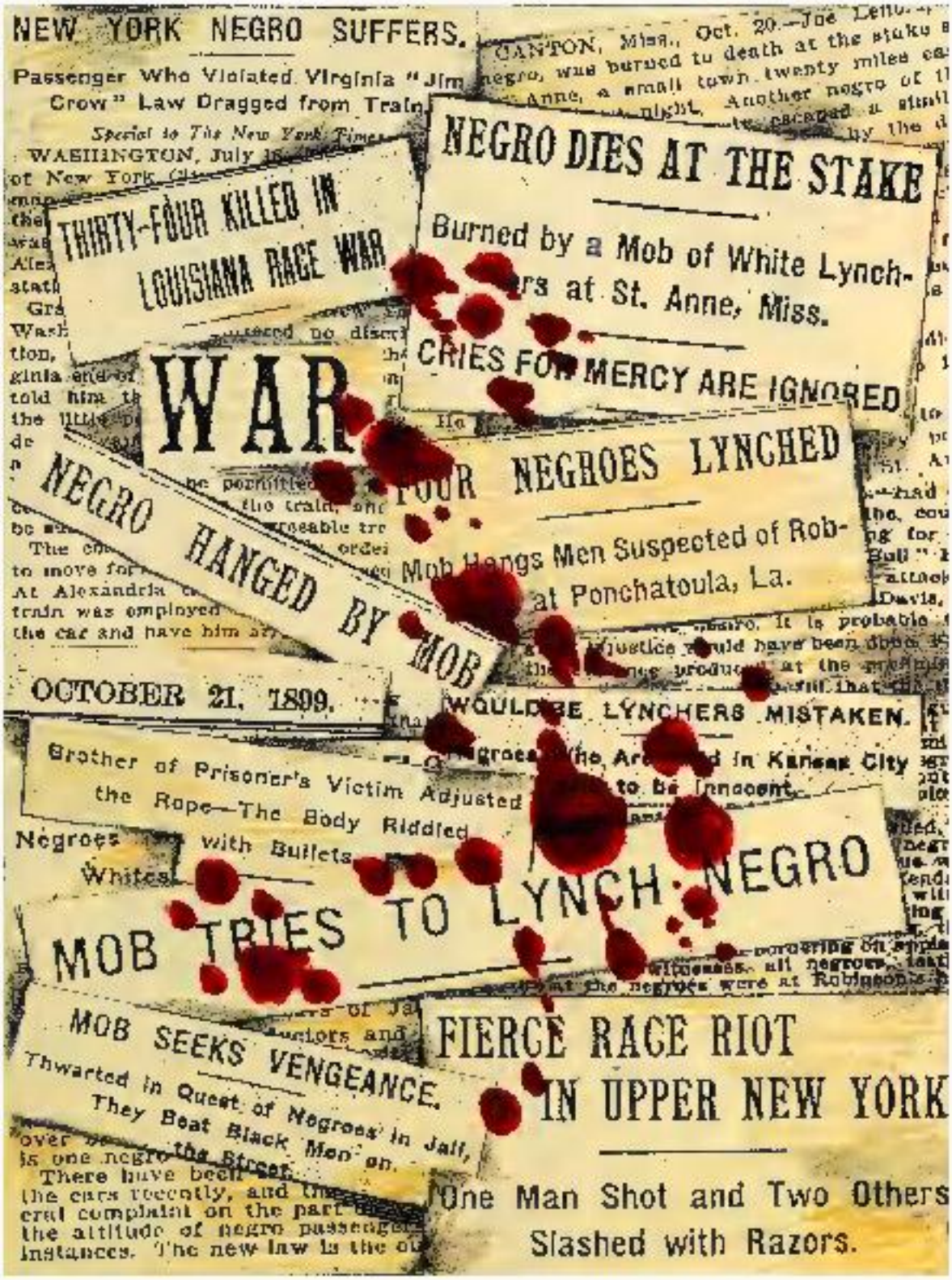

रंग भेद का यह परदा घृणा और खून के मज़बूत धागों से बुना था।

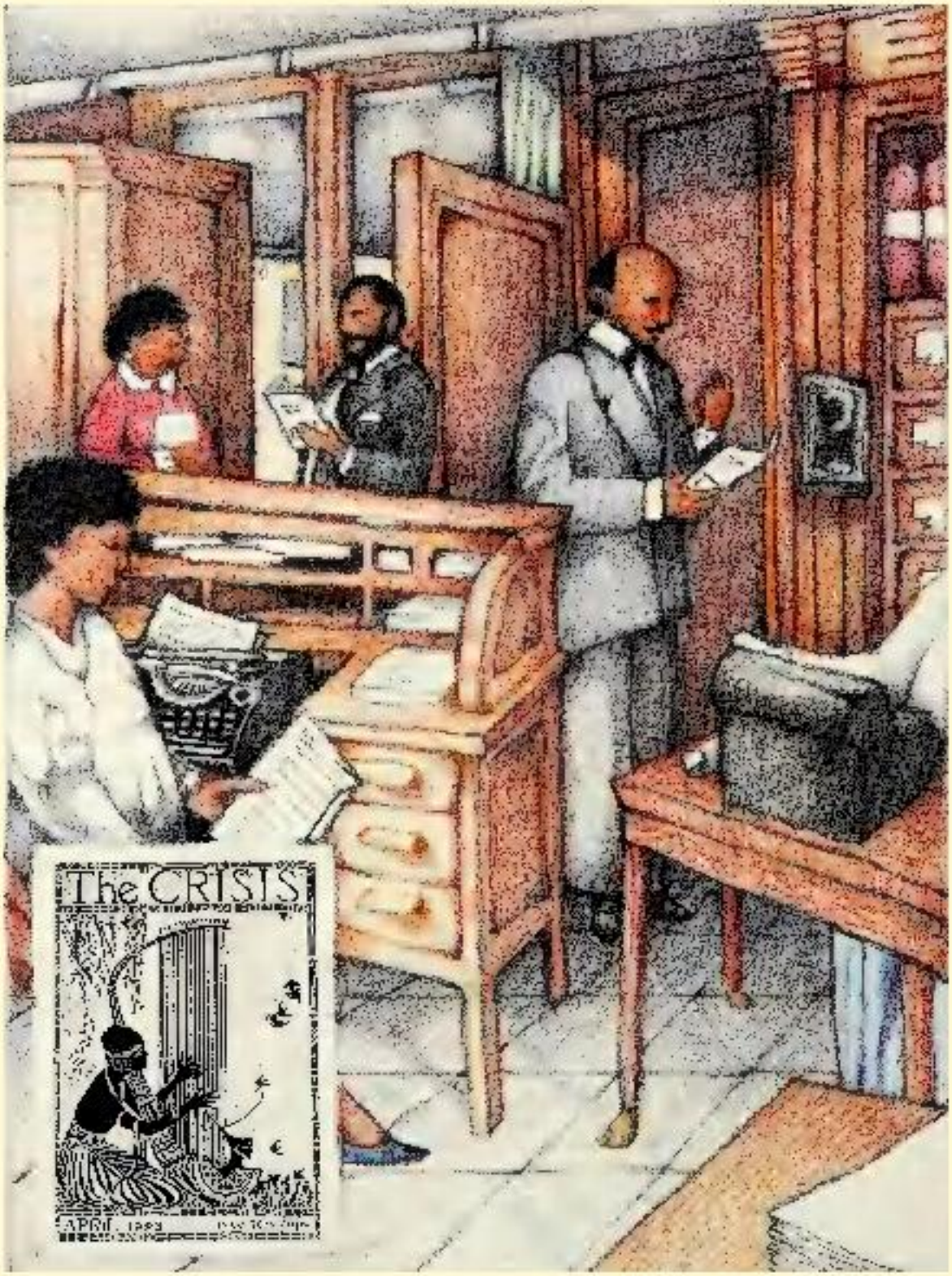

डॉ. डु बॉइस एनएएसीपी के प्रचार व शोध निदेशक बने और
उन्होंने संगठन के मुखपत्र *क्राइसिस* की शुरुआत की।

दंगों से नाराज़ लोगों में पत्रकार, सामाजिक कार्यकर्ता व उदार सोच के लोग शामिल थे। इन लोगों ने एक सम्मेलन की योजना बनाई ताकि नागरिक अधिकार और राजनीतिक आज़ादी के लिए संघर्ष शुरू किया जा सके।

डु बॉइस व नियाग्रा आंदोलन के अन्य सदस्यों से इस सम्मेलन से जुड़ने का आग्रह किया गया। सम्मेलन 30 मई से 1 जून, 1909 तक चला। भागीदारों के बीच से एक सशक्त नागरिक अधिकार संगठन - नैशनल एसोसिएशन फॉर एडवान्समेंट आव कलर्ड पीपल या एनएएसीपी उभरा।

डु बॉइस इसके प्रचार और शोध के निदेशक बने और उन्होंने संगठन के मुखपत्र *क्राइसिस* की शुरुआत की। इस पत्रिका में काले लोगों की उम्मीदों, उनकी समस्याओं की नई व्याख्या पेश की गई। अफ्रीकी अमरीकी कवियों, लेखकों की आवाज़ को उभारा गया। 'लिटिल पेजेस्' नाम से बच्चों के पन्ने जोड़े गए। एक वार्षिक बाल अंक भी निकाला जाने लगा जिसमें बच्चों को मज़बूत शिक्षा देने की चर्चा होती।

अफ्रीकी अमरीकी मूल के लोगों के बारे में ईमानदार व खरी जानकारी की कमी डु बॉइस को खलती थी। उनके बारे में गलतफहमियाँ दूर करने और अफ्रीकी देशों के समृद्ध इतिहास और संस्कृति के बारे में वे क्राइसिस व दूसरे प्रकाशनों के लिए व लेख लिखने लगे।

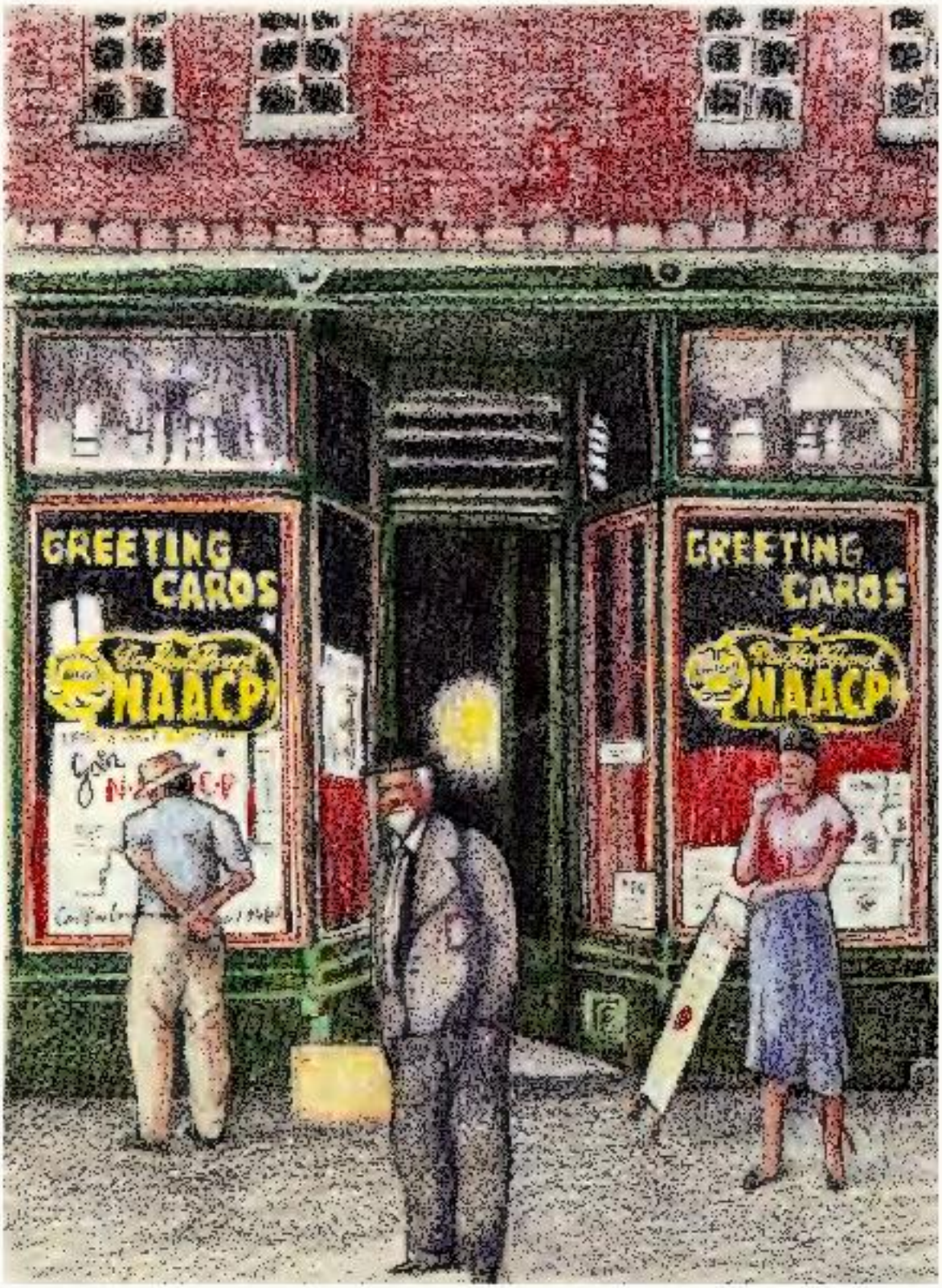

एनएएसीपी एक सशक्त नागरिक अधिकार संगठन बना।

क्राइसिस में छपी सामग्री ने काले लोगों को प्रेरित किया। डॉ. डु बॉइस के लिखित शब्दों ने अफ्रीकी अमरीकियों के आत्म-सम्मान और आत्म-विश्वास को जगाया। उनमें एक बेहतर दुनिया की दिशा में काम करने का साहस और उम्मीद जगाई।

पिछले कई सालों से सबसे लोकप्रिय अफ्रीकी अमरीकी नेता बुकर टी. वॉशिंगटन रहे थे। वे शिक्षा, खास तौर से पेशेवर शिक्षा पर ज़ोर देते रहे थे। पर डु बॉइस मानते थे कि काले लोगों में कुशल कारीगर बनने से अधिक क्षमता है। वे नहीं चाहते थे कि काली जनता को क्या करना चाहिए क्या नहीं यह गोरे तय करें।

डु बॉइस के विचार न केवल गोरों को बल्की कई कालों को भी अतिवादी लगते थे। उन्हें लगता था कि काले लोगों को 'अपनी हद में रहना' चाहिए। पर डु बॉइस के दूरदर्शी नज़रिए ने अमरीका में और अफ्रीका के कई देशों में, जो युरोपीय उपनिवेश थे, नागरिक अधिकार आंदोलनों को प्रेरित किया।

व्यापक समझ की तलाश

जिन वर्षों में डु बॉइस *क्राइसिस* के संपादक रहे (1910-1934) वह अमरीका के इतिहास का तूफानी दौर था। इसी दौरान पहला विश्व युद्ध छिड़ा और तब अमरीका महा मन्दी (ग्रेट डिप्रेशन) से गुज़रा।

युद्ध के समय देश भर के अलग-अलग राज्यों के काले सैनिक विदेशों में लामबन्द किए गए, जहाँ वे अफ्रीकी उपनिवेशों के कालों के साथ मिल कर दुश्मन से लड़े। युद्ध खत्म होने के बाद घर लौटने पर उनके मन में अपनी दुनिया के बारे में नया भाव था। वे अन्य नागरिकों की तरह अधिकार चाहते थे। इधर बड़े शहरों में नौकरियों की कमी थी। गोरों को खतरा महसूस हुआ। 1919 की गर्मियों में कई शहरों में नस्ली दंगें फिर से भड़क उठे।

1920 के दशक में सामाजिक उथल-पुथल के बीच न्यू यॉर्क शहर के हारलम क्षेत्र में रचनात्मक ऊर्जा का संचार हुआ। काले लेखकों, कलाकारों, संगीतकारों को अंतरराष्ट्रीय पहचान व सम्मान मिला। हारलम अमरीका के अश्वेत पुनर्जागरण की राजधानी कहलाने लगी। अफ्रीकी अमरीकियों की आत्म-चेतना और उनकी कला में निखार आया।

डु बॉइस ने भी कई किताबें लिखीं, जिनमें उनकी आत्मकथा और उपन्यास शामिल थे। उन्होंने अफ्रीकी अमरीकियों के इतिहास को नाटक के माध्यम से रखा और एक नाटक समूह बनाया। वे बेबाकी से लगातार *क्राइसिस* व दूसरे प्रकाशनों में नस्ली हिंसा व कालों की हत्याओं की व गोरों की मानसिकता की आलोचना करते रहे।

अफ्रीकी-अमरीकी लोगों की कला और आत्मा अब पल्लवित हो रही थी।

डु बॉइस के कार्य का सबसे महत्त्वपूर्ण हिस्सा था, यात्राएं करना। वे युरोप के अनेक देशों, रूस और अफ्रीका गए। इन यात्राओं ने उनको विश्व समस्याओं की समझ देने के साथ अपने देश की नस्लवादी समस्या की गहरी समझ भी दी।

वे समझ सके कि नस्ली भेदभाव के पीछे यह गलतफहमी है कि कोई एक नस्ल दूसरी से बेहतर होती है। उनका मानना था कि जब तक संयुक्त राज्य अमरीका दुनिया के दूसरे हिस्सों में अश्वेतों के शोषण को सहेगा, तब तक काले अमरीकी सचमें आज़ाद नहीं हो सकेंगे।

डु बॉइस ने पैन एफ्रिकन, यानी अखिल अफ्रीका, आंदोलन आरंभ किया ताकि अफ्रीकी मूल के सभी लोग अफ्रीकी उपनिवेशों की आज़ादी के लिए एकजुट हों। 1919 में पेरिस में हुए पहले अखिल अफ्रीका सम्मेलन में केवल सत्तावन प्रतिनिधि जुड़े। 1921 से 1945 के बीच उन्होंने चार और सम्मेलन आयोजित किए जिनमें प्रतिनिधियों की संख्या लगातार बढ़ी। उन्हें 'फादर ऑफ़ पैन एफ्रिकनइज्म' कहा जाने लगा।

1945 तक आते-आते लोगों के अधिकार को लेकर डु बॉइस के सरोकार विश्व शांति के अभियान की शक्ल ले चुके थे। उनका मानना था कि शांति की बुनियाद दरअसल सभी लोगों की आज़ादी है। उन्हें इस बात का अंदेशा नहीं था की इस अभियान में एक बड़ी बाधा उनकी अपनी ही सरकार होगी।

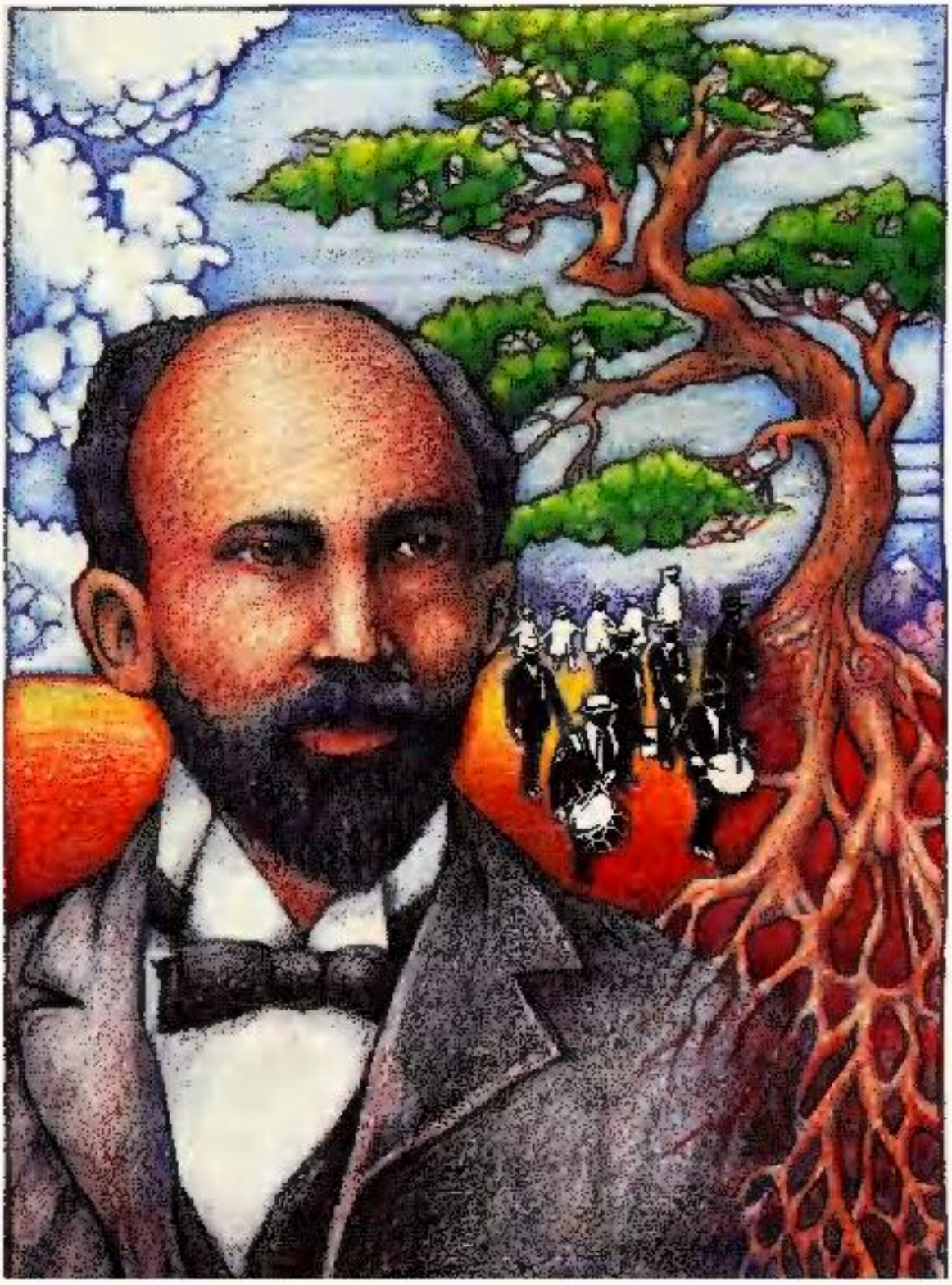

डु बॉइस ने काले अमरीकियों को अपने समृद्ध इतिहास और संस्कृति पर गर्व महसूस करने को प्रेरित किया।

शांति सूचना केन्द्र ने अमरीकियों को एटम बम के उन्मूलन के लिए स्टॉकहोम अपील पर दस्तखत करने को प्रोत्साहित किया।

राजनीतिक चुनौतियाँ

दूसरे विश्व युद्ध के बाद, पहले मित्र राष्ट्र रहे सोवियत युनियन के साथ अमरीका के रिश्ते बिगड़े और 'शीत युद्ध' का लम्बा दौर शुरू हुआ। हालाँकि दोनों देशों की सेनाएं आपस में लड़ी नहीं, पर भय और शक के चलते दोनों देश एक-दूसरे से दूर हुए। उनके बीच 'लोहे का परदा' खिंच गया।

यह ड़र और शक एक बीमारी की तरह अमरीका में फैला और लोग साम्यवादी विचारधारा और सोवियत लोगों को शैतानी मानने लगे। विस्कॉन्सिन के सिनेटर मैकार्थी ने इस भय को हवा दी। कम्युनिस्ट झंडे के लाल रंग के कारण, इस दौर को 'लाल खौफ' का दौर कहा गया।

डु बॉइस साम्यवाद को लेकर इस भय का विरोध में बोले। वे 'एक हज़ार लोगों की समिति' का हिस्सा बने जो इस भय को खत्म करना चाहते थे। विख्यात वैज्ञानिक एल्बर्ट आइन्स्टाइन, नाटककार लिलियन हैलमन भी इस समिति के सदस्य थे। डु बॉइस ने सोवियत युनियन व अमरीका में सहकार बढ़ाने की बात की, क्योंकि विश्व शांति के लिए यह ज़रूरी था।

डु बॉइस व अन्य सक्रिय कर्मियों ने 'पीस इन्फोमेशन सेन्टर' या शांति सूचना केन्द्र बनाया और *पीसग्रामस्* नाम से उसका मुखपत्र छापना शुरू किया।

संघ सरकार का ध्यान शांति सूचना केन्द्र की ओर तब गया जब उसके स्वयंसेवक एटम बम के उन्मूलन के लिए लोगों के दस्तखत इकट्ठा कर रहे थे। इसके कुछ समय बाद न्यायिक विभाग से एक पत्र आया जिसमें शांति सूचना केन्द्र को 'विदेशी संस्था' के प्रतिनिधि के रूप में पंजीकृत करने को कहा गया। अमरीकी सरकार इशारा यह था कि शांति सूचना केन्द्र कम्युनिस्ट सरकार के लिए काम करता है।

लाल खौफ के इस दौर में सरकार से उलझने के बदले शांति सूचना केन्द्र से जुड़े लोगों ने उसे बन्द करना बेहतर समझा। डु बॉइस ने, जो केन्द्र के अध्यक्ष थे, सभी सदस्यों को बताया कि 'हमने विश्व भर में शांति की कामना का संदेश देश के हरेक राज्य में भेज दिया है।'

1948 में डु बॉइस काउन्सिल ऑफ़ एफ्रिकन अफेयर्स के मानद अध्यक्ष बने। काउन्सिल का लक्ष्य आम जनता को अफ्रीका के बारे में बताना और अफ्रीकी देशों के लोगों की मदद करना था। 1950 में उनकी पत्नी नीना का देहान्त हुआ जो गत त्रेपन वर्षों से उनके साथ थीं। 27 फरवरी 1951 के दिन काउन्सिल ने डु बॉइस के तिरासवीं सालगिरह के उपलक्ष्य में एक भोज की योजना बनाई।

उनकी मंगेतर शर्ली ग्राहम, उनकी मित्र और अनुयायी भी थीं।

इस बीच डु बॉइस व शांति सूचना केन्द्र के चार अन्य कार्यकर्ताओं पर संघ सरकार ने यह आरोप लगाया कि उन्होंने विदेशी संस्था के प्रतिनिधि के रूप में खुद को पंजीकृत नहीं किया है। उन सबको 16 फरवरी 1951 को मुकदमे की सुनवाई के लिए वॉशिंगटन डी.सी. बुलाया गया।

शर्ली ग्राहम ने डु बॉइस से आग्रह किया कि वे 16 फरवरी के पहले विवाह कर लें, ताकि अगर विलियम को कैद कर लिया गया तो पत्नी के रूप में उन्हें मिलने का अधिकार होगा। 14 फरवरी 1951 को एक छोटे समारोह में दोनों ने विवाह किया।

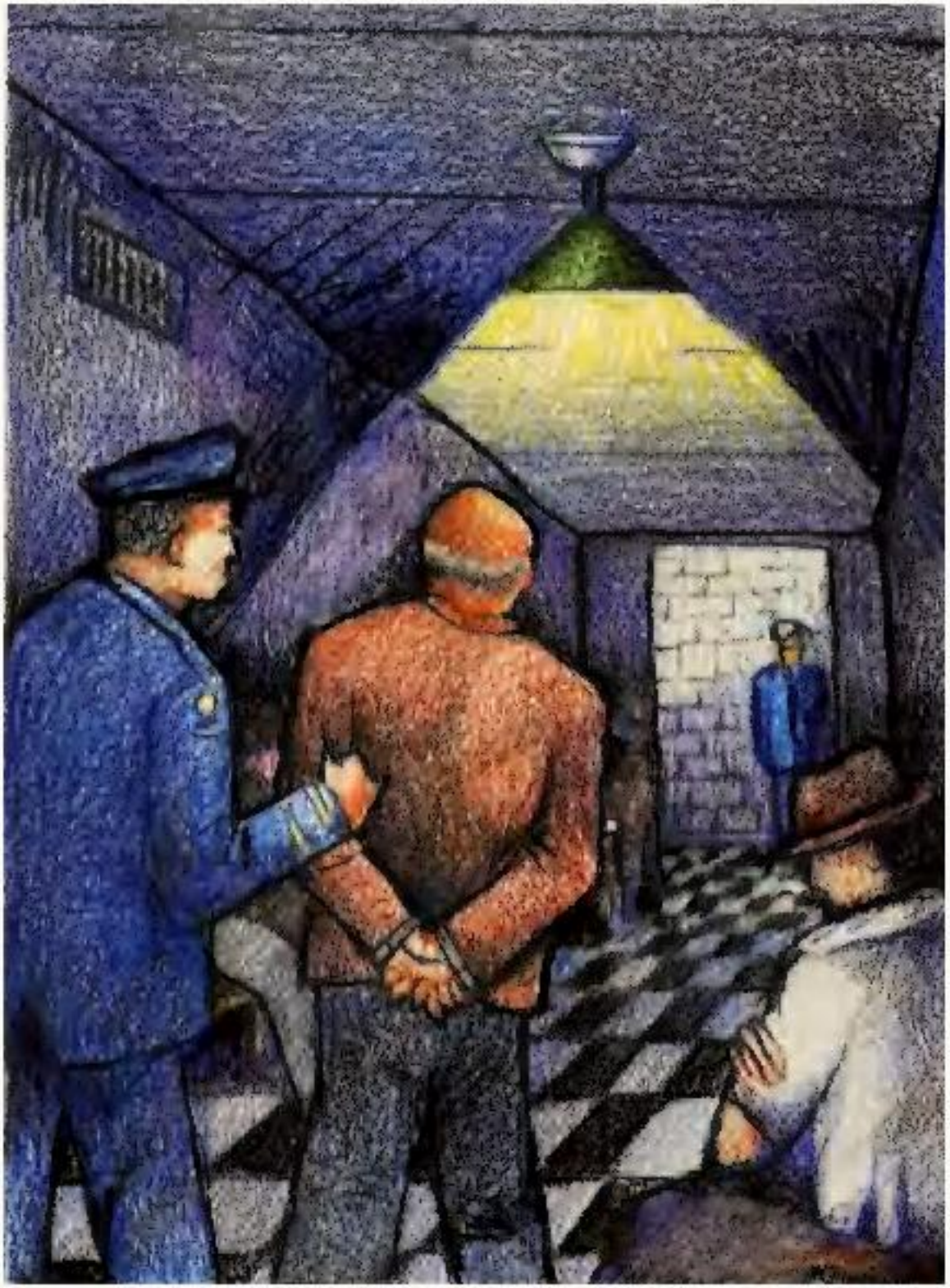

डु बॉइस की ऊंगलियों के निशान लिए गए, छिपे हथियारों
के लिए तलाशी ली गई, और तब हथकड़ियाँ जड़ दी गईं।

डु बॉइस ने अदालत से कहा, ''यह दुखद है कि हमें अदालत के सामने खुद को उस जुर्म के लिए बेगुनाह कहना पड़ रहा है, जो कोई जुर्म हो ही नहीं सकता - अमरीकियों और दुनिया के लोगों के बीच शांति और दोस्ती की पैरवी करना। ... उस दुनिया में जो आणविक तबाही की कगार से बची हो क्या शांति की उम्मीद करना और उसके लिए काम करना गुनाह है?''

शांति सूचना केन्द्र के सदस्यों को अंघेरी सीढ़ियों और गलियारों से ले जाया गया। उनकी ऊंगलियों के निशान लिए गए, छिपे हथियारों के लिए तलाशी ली गई और तब हथकड़ियाँ जड़ दी गईं। बाद में हरेक को एक-एक हज़ार डॉलर की ज़मानत पर छोड़ा गया। अदालत का फैसला आया नहीं था पर अखबारों ने विलियम को गुनाहगार के रूप में पेश किया।

इन कठिनाइयों के बावजूद 27 फरवरी को मित्रों व परिवार जनों के बीच डु बॉइस व शर्ली ग्राहम का फिर से विवाह हुआ। पर उनके सामने मुकदमे के खर्चे की समस्या थी। उन्होंने देश के अलग-अलग भागों में भाषणों के दो दौरों की योजना बनाई, ताकि धन जुटाया जा सके और मामले का प्रचार हो।

भाषणों के दूसरे दौरे में, शिकागो में पंद्रह हज़ार युवा शांति कार्यकर्ताओं के सामने भाषण देने के बाद डु बॉइस ने शर्ली से कहा ‘‘देश के नौजवान जाग रहे हैं। आज वे सवाल पूछ रहे हैं, कल वे बदलाव के लिए काम करेंगे। उन्हें सच्चाई सुननी है। मैंने ईमानदारी से बात रखी है। और उन्होंने बेखौफ मेरी बात सुनी है!’’

इधर डु बॉइस को अंतरराष्ट्रीय समर्थन मिलने लगा। न्यायिक विभाग में दुनिया भर से खत व तार आने लगे। नवंबर 1951 में मुकदमा आरंभ हुआ। डु बॉइस व उनके साथियों को बेगुनाह पाया गया। पर अगर ज़रूरत पड़ती तो एल्बर्ट आइन्स्टाइन भी उनके पक्ष में गवाही देने को तैयार थे।

हालांकि विलियम को सभी आरोपों में निर्दोष पाया गया था, जनता उन्हें शक की नज़र से देखने लगी। व्यावसायिक प्रकाशन उनकी पुस्तकें और अखबार उनके लेख नहीं छापना चाहते थे, कॉलेजों ने उन्हें भाषण देने को बुलाना बन्द कर दिया।

1952 में डु बॉइस और उनकी पत्नी ने पासपोर्ट के लिए आवेदन किया। उनसे कहा गया कि वे यह लिख कर दें कि वे कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य नहीं हैं। उन्होंने इससे इन्कार किया। 1952 से 1958 तक वे देश के बाहर यात्रा नहीं कर सके। विश्व शांति काउन्सिल ने 1953 में उन्हें अंतरराष्ट्रीय विश्व शांति पुरस्कार से नवाज़ा। पर वे उसे लेने युरोप नहीं जा सके।

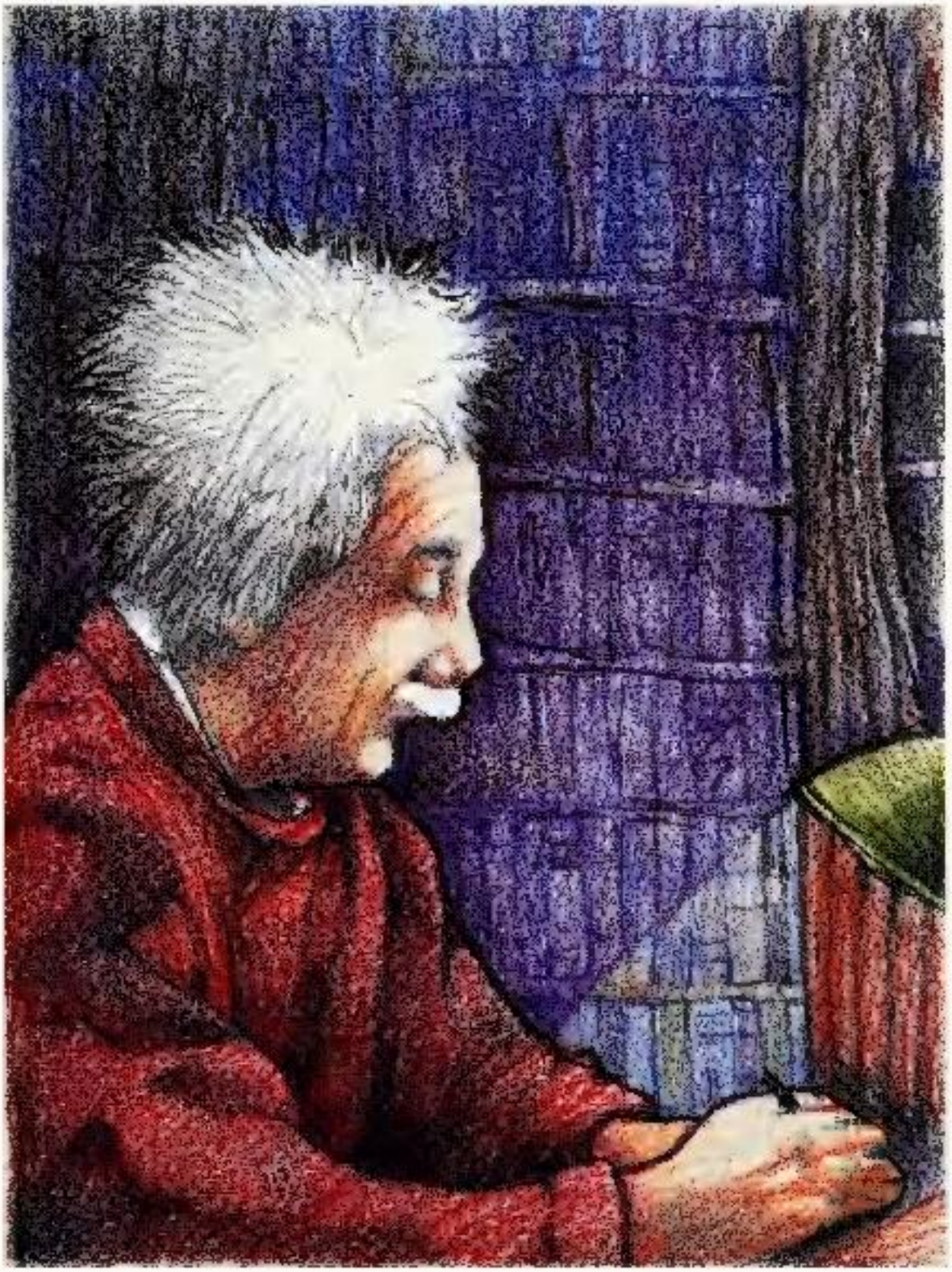

एल्बर्ट आइन्स्टाइन ने उनके चरित्र के गवाह के रूप में अदालत में उपस्थित होने की पेशकश कर अपना समर्थन जताया।

1950 के दशक के बीच में दक्षिण के राज्यों में काले व गोरे लोगों में एक नया लोकतांत्रिक भाव जगने लगा। कालों के साथ किए जाने वाले भेदभाव का कई शहरों में विरोध हुआ। कालों द्वारा आयोजित विरोध आंदोलन व्यापक व अहिंसक बनने लगे।

1958 में अमरीका की सर्वोच्च अदालत ने यह घोषणा कर दी कि पासपोर्ट पाने के लिए अपनी राजनीतिक विश्वासों को जाहिर करना ज़रूरी नहीं है। आखिरकार डु बॉइस व उनकी पत्नी को पासपोर्ट मिले। उन्होंने फौरन ही यात्रा की योजना बनाई।

अगस्त 1958 से जुलाई 1959 तक दोनों ने इंग्लैण्ड, फ्रांस, चैकोस्लोवाकिया, पूर्वी जर्मनी, सोवियत युनियन, व चीन की यात्रा की। वे इन देशों के राष्ट्राध्यक्षों से मिले। कई युरोपीय विश्व विद्यालयों ने उन्हें मानद् डॉक्टरेट की उपाधियों से सम्मानित किया।

इन यात्राओं ने उनके मन में साम्यवादी विचारधार के लिए सम्मान बढ़ाया, पर साथ ही उन्हें अमरीका की पूंजीवादी शैली की सरकार को लेकर चिंता भी होने लगी।

हालांकि विलियम इस समय इक्यानवे वर्ष के हो चुके थे उनकी ऊर्जा बरकरार थी और वे आगे भी काम करते रहना चाहते थे।

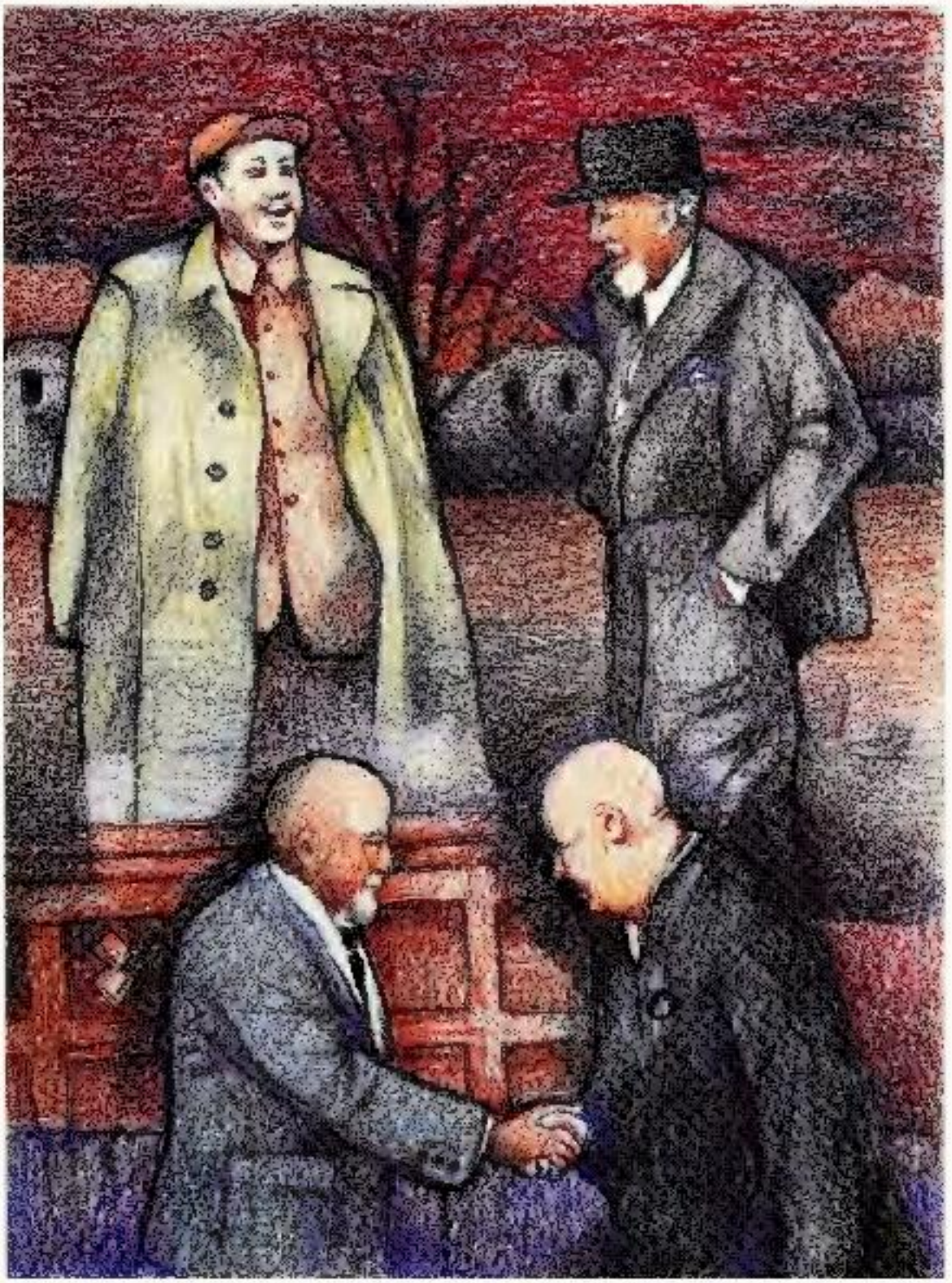

डु बॉइस चीन तथा सोवियत युनियन के राष्ट्राध्यक्षों से मिले।

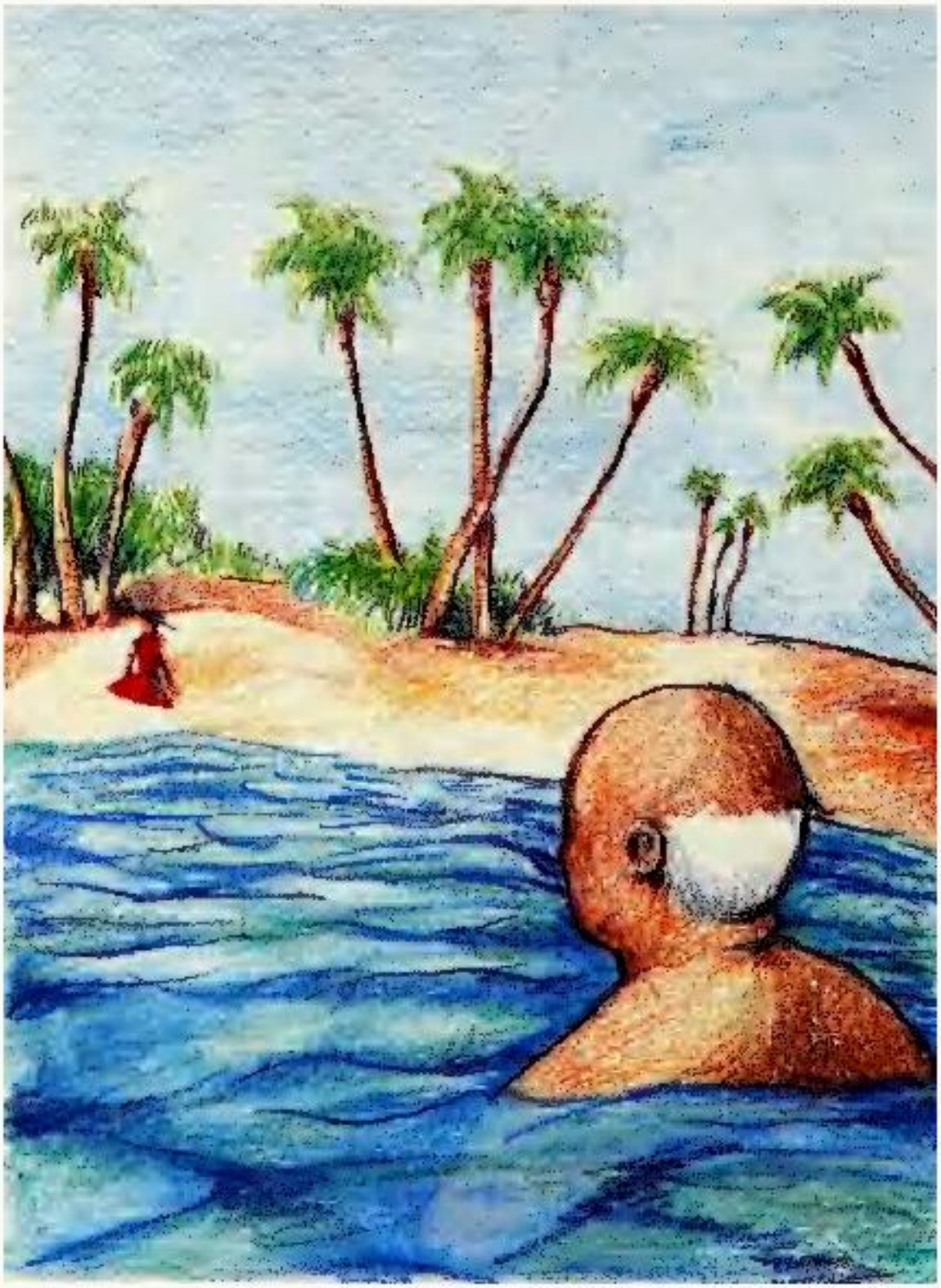

डु बॉइस रोज़ाना तैरने का लुत्फ उठाते थे।

यात्रा जारी रही

फरवरी 1960 में डु बॉइस की बयानवीं सालगरिह के उपलक्ष्य में उन्होंने और उनकी पत्नी ने वर्जिन आयलैण्ड में दो सप्ताह बिताए। वे रोज़ाना सुबह नाश्ते के पहले समुद्र में तैरने का लुत्फ उठाते थे।

काम डु बॉइस को ऊर्जा से भर देता। जुलाई 1960 को डॉ. डु बॉइस अपनी पत्नी के साथ घाना गए। वहाँ के राष्ट्रपति क्वामे एन्क्रुमा ने अनुरोध किया कि वे *एन्साइक्लोपीडिया अफ्रीकाना* - जो अफ्रीका की संस्कृति व इतिहास को प्रस्तुत करता हो - रचने के लिए घाना में रहे।

ऐसी परियोजना का विलियम को पिछले पचास सालों से इन्तज़ार था पर धन न होने से वे यह कर नहीं सके थे। पर एन्क्रुमा के आर्थिक सहयोग के वादे के बावजूद डु बॉइस को चिंता थी कि वे इसे पूरा कर पाएंगे या नहीं। वे एन्क्रुमा को जवाब दिए बिना ही न्यू यॉर्क लौट गए।

वे प्रस्ताव पर सोच ही रहे थे कि इस बीच उनकी बेटी योलैण्डे की मौत हो गई। उसे अपनी पहली पत्नी और बेटे की कब्रों के पास ग्रेट बैरिंगटन में दफनाने के बाद उन्होंने घाना जाने का निर्णय लिया। पर यात्रा करने से पहले उन्हें एक और महत्त्वपूर्ण निर्णय लेना था।

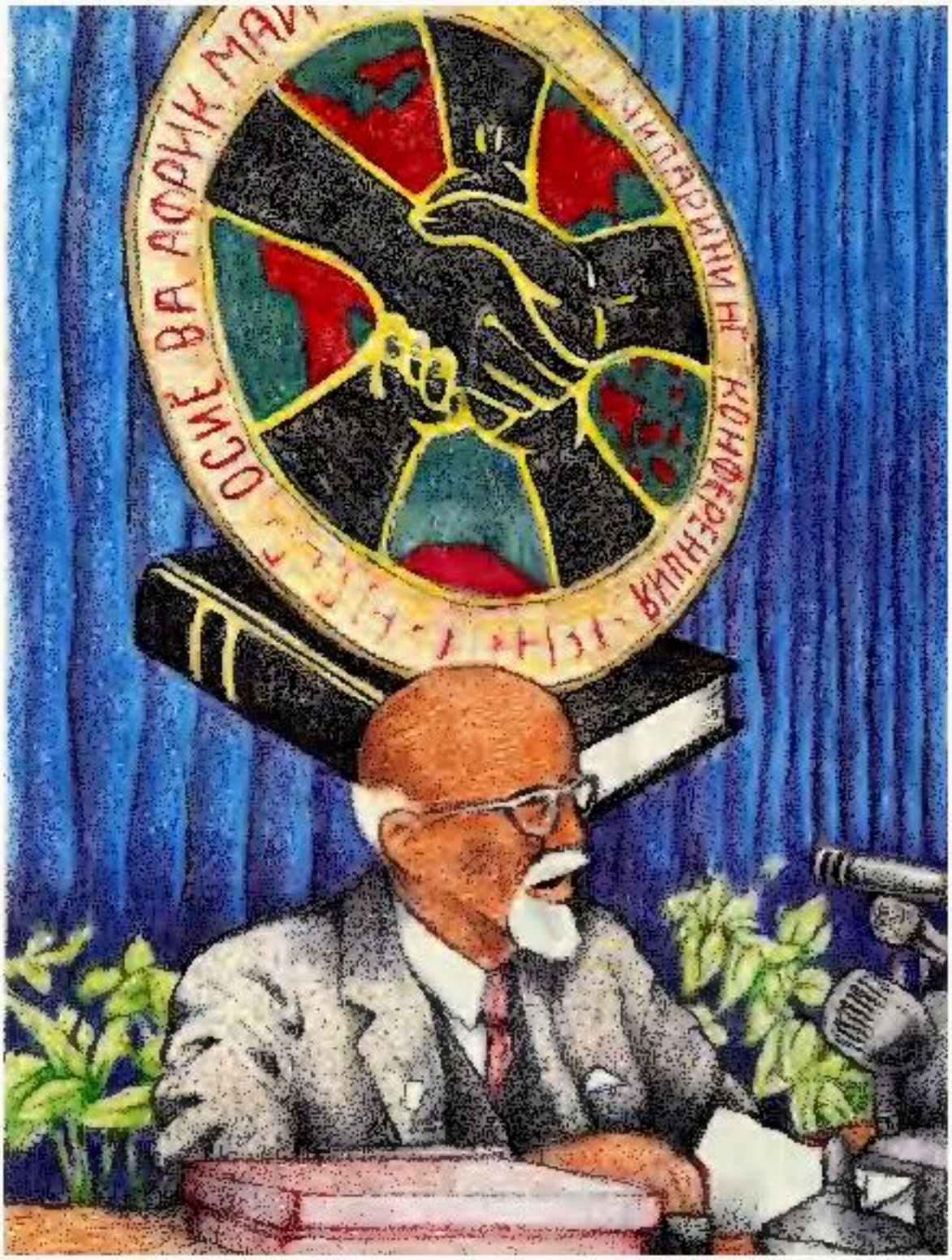

एफ्रो-एशियन लेखकों का पहला सम्मेलन 1958 में ताशकंद में आयोजित हुआ।

डु बॉइस को दुनिया भर की अपनी यात्राओं व समाजशास्त्री के रूप में अपने काम के कारण यह लगने लगा था कि दुनिया समाजवाद की और झुक रही है। आदर्श समाजवादी राष्ट्र में वस्तुओं व सामग्रियों का उत्पादन ज़रूरत और उपयोग से तय होता है, जबकि पूंजीवाद में सिर्फ मुनाफे से।

डु बॉइस मानते थे कि कम्युनिज़्म समाजवाद का ही अतिवादी रूप है और वह पूंजीवाद को फैलने से रोक सकेगा। वे यह नहीं सोचते थे कि रूस या चीन में जैसा साम्यवाद है वह अमरीका में चल सकेगा। पर उन्हें लगता था कि उन देशों से सीख कर अमरीका के लिए उपयुक्त साम्यवादी अर्थ व्यवस्था बनाई जा सकती है।

अक्तूबर 1961 में, घाना के लिए निकलने के ठीक पहले डु बॉइस ने अमरीकी कम्युनिस्ट पार्टी को पत्र लिख सदस्यता का आवेदन किया। उन्होंने लिखा ‘‘अमरीकी कम्युनिस्ट पार्टी का रास्ता साफ है। वह संयुक्त राज्य के सामने एक तीसरा राजनीतिक दल रखेगी और लोकतंत्र को बहाल करेगी।‘‘

कुछ दिनों बाद अगस्त में ही वे और शर्ली घाना के अक्रा शहर चले आए। एन्क्रुमा ने उन्हें रहने के लिए सात कमरों का घर उपलब्ध करवाया जो घने पेड़-पौधों से घिरा था। फलों का बागान में संतरों और नीम्बू के पेड़ थे जो शाम को महकते थे। एन्क्रुमा उनके करीबी मित्र बने और अक्सर मिलने आते थे।

डु बॉइस ने दो वर्षों तक *एन्साइक्लोपीडिआ एफ्रिकाना* पर सघन मेहनत से काम किया। पर वे कमज़ोर होते जा रहे थे। 1962 में उन्हें अपने इलाज के लिए बुखारेस्ट व लंदन जाना पड़ा। पर अपनी सर्जरी के बाद भी चैरानवे वर्ष के विलियम यह कह काम पर लौटे कि ‘‘मेरे पास बर्बाद करने को समय नहीं है।’’

27 अगस्त 1963 को एन्क्रुमा डु बॉइस से मिलने आए। डु बॉइस ने उन्हें अपने जीवन के आखिरी सालों को सुखद बनाने के लिए धन्यवाद दिया, पर साथ काम पूरा न कर पाने की माफी मांगी। कमरे से बाहर निकलने पर एन्क्रुमा की आँखों से आँसू बह रहे थे। उन्होंने श्रीमति डु बॉइस से कहा, ‘‘आपने सुना? वे मुझे अलविदा कह रहे थे।’’ एन्क्रुमा के जाने के बाद शर्ली अपने पति के पास कमरे में लौटीं। उनका हाथ थाम उनके पास बैठीं। विलियम सो गए और फिर कभी नहीं जागे।

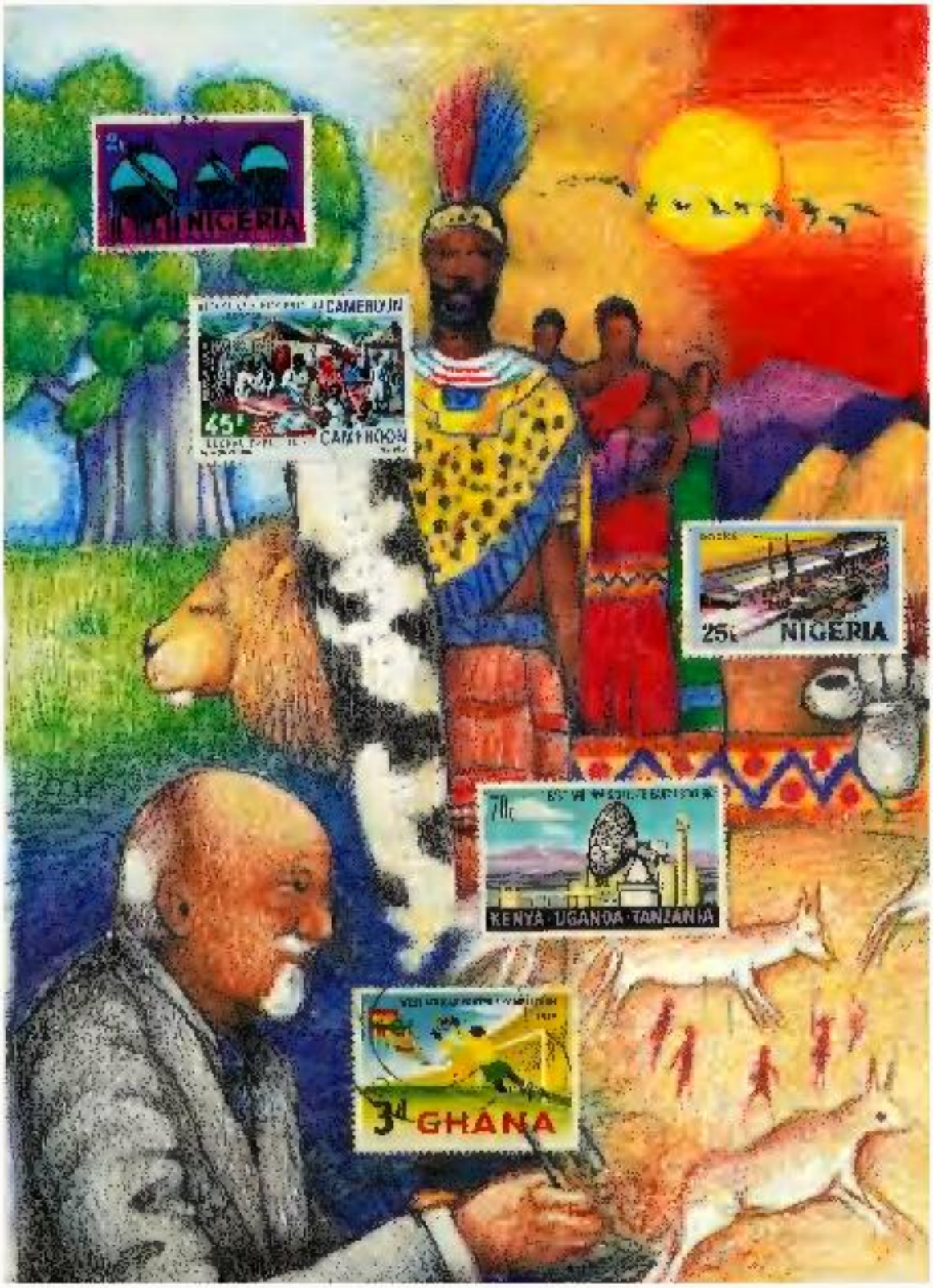

एन्साइक्लोपीडिया एफ्रिकाना प्रागऐतिहासिक काल से लेकर उद्योगों व कलाओं की मौजूदा प्रगति तक अफ्रीकी सभ्यता के इतिहास को प्रस्तुत करता है।

उस दिन डु बॉइस व अन्य लोगों की चेतना व उनका प्रभाव साफ नज़र आया।

उनकी मृत्यु के अगले दिन, 28 अगस्त 1963 को डब्ल्यू. ई. बी. डु बॉइस और उनके जैसे अन्य लोगों की चेतना और प्रभाव साफ नज़र आया, जिन्होंने अपना जीवन रंग भेद के परदे को तार-तार करने में लगाया था। उस दिन वॉशिंगटन डी.सी. में 250,000 अश्वेत लोग इकट्ठा हुए और सबने डॉ. मार्टिन लूथर किंग को उनका विख्यात 'मेरा एक सपना है' भाषण देते सुना।

एनएएसीपी के कार्यकारी निदेशक ने यह सूचना दी कि जिस महान व्यक्ति के कारण इस तरह का आयोजन संभव हुआ उनका पिछली रात घाना में देहान्त हो चुका है।

कुछ लोग डु बॉइस को अपने समय से बहुत आगे कहते थे। वे उन्हें नबी कहते थे क्योंकि वे वह देख सकते थे जो दूसरों को नज़र ही नहीं आता था। वे भिन्न संस्कृतियों, भिन्न विचारधाराओं से बचते नहीं थे क्योंकि वे सत्य को तलाशने से डरते नहीं थे। वे गलत सिद्ध होने पर अपने सिद्धान्तों को त्याग देते थे। उन्होंने अपना जीवन लोगों को समझने और सब शांति से साथ रह सकें ऐसी राह तलाशने में लगाया था।

अंत